Goonjnayi@gmail.com

अगस्त अंक 2022

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका

नई गूँज

Www.nayigoonj.com

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 8

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

संपादकीय

कामयाबी मांगने से नहीं

जागने से मिलती है !

शिवा स्वयं

नींद क़ो छोड़ दें तो जो मिलेगा वो अद्भुत होगा ! हर वो चीज साकार हो जाएगी जिसका हम स्वप्न देख रहें होते हैं ! जो भी असंभव लगता है हमें सब संभव होने लगेगा !'

आप सोच रहें होंगे कि ऐसे कैसे ?

लेकिन ये सत्य है ! जो समय सुबह का होता है उसमें इतनी ऊर्जा होती है जो दिन भर के कई घंटो से भी नहीं मिल सकती !

इस का सदुपयोग करने वाले विलक्षण व्यक्तित्व बन गए हैं , यानि अद्धभुत प्रतिभाओं के धनी !

हम दिन भर भी भागते भागते काम और बस काम करते हैं ! बहुत कुछ दायित्व निभा लेते हैं लेकिन हमारी वास्तविक उपलब्धि हमें

प्रातः काल किये गए कामों से ही होती है ! अगर आप पढ़ना चाहते हों तो सबसे उत्तम समय वही है ! पढ़िए और अपने भीतर ज्ञान भर कर देखिये ! यही वह शक्ति है जो दिमाग़ की खुराक है ! शरीर की आवश्यकता भोजन है और दिमाग़ की... मन की... अंतरात्मा की शक्ति ज्ञान होता है !'अगर आप भीतर से ज्ञान से भरे हैं तो मान लीजिये कि आप धनी हैं क्योंकि धन से बने धनी बनने के लिए हम भीतर से भर नहीं रहें होते बल्कि जो और जितना भीतर से भरे होते हैं उतने ही हम खाली भी होते जाते हैं क्योंकि हमारा लक्ष्य खुद क़ो ज्ञान से भरना कदापि नहीं होता !

एक धनी व्यक्ति ज़ब समस्त मानवता के लक्षणों से ओत प्रोत हो तभी हम मान सकते हैं कि वह वास्तव में धनी है !

ऐसे व्यक्ति ने खुद क़ो भीतर से नहीं केवल बाहर से बढ़ाया है,

अतः हम वास्तविक रूप सफलता का समझ सकें इसके लिए तो सुबह ही जगना होगा ! वही शक्ति खुद में भरनी होगी ! हमारे बड़े कहते थे कि सुबह के समय क़ो अमृत वेला कहा जाता है,!

अमृत वेला अर्थात अमृत समय ! इस समय क़ो आत्मसात करना, अपने भीतर भरना बिल्कुल आपको ऐसा ही असर देगा मानो अमृत पान कर लिया हो !

तो कामयाबी चाहिए तो जागिये....

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में

ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राहय हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति- दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।

अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- **प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!**

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
	लेख –		
1	दो घड़ी बैठा करो बुजुर्गों के पास भी	डॉ घनश्याम बादल	1 – 4
2	स्वतंत्रता दिवस	बृजेश कुमार	5 – 7
3	सब जल्दी में है	प्रियदर्शी खैरा	8 – 11
	कविता		
4	आह्वान	गिरेंद्र सिंह भदोरिया	12 – 19
5	अजीब बात है / रिटायरमेंट	हरदीप सबरवाल	20 – 24
6	नयनों में	गौरीशंकर वैश्य	25
7	विज्ञानकू	सुभाष चंद्र लखेरा	26 – 29
	कहानी		
8	नागर मोथा	मृत्युंजय कोहरी	30 – 39
9	ग़ज़ल	हमीद कानपुरी	40
	लघु कथा		
10	पूरी तरह से बनो	डॉ शिवा धमेजा	41

11	दुर्दशा	समीर उपाध्याय	42 - 43
	नारी तुम अबला नहीं सबला हो		
12	हाडा रानी	बृजेश कुमार	44 – 46
	आलेख –		
13	आलेख- चलो बॉट तौले	डॉ आर वी भंडारकर	47 - 50
14	ऐतिहासिक स्थल एक नजर –जूनागढ़ का दुर्ग (राज.)		51 – 53
	साक्षात्कार		
15	साक्षात्कार	संतोष कुमार विजय	54 - 60

दो घड़ी बैठा करो बुजुर्गों के पास भी !

सन 2006 से 15 जून को हर साल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता' दिवस मनाया जाता है। इसका मूल उद्देश्य बुजुर्गों के प्रति बढ़ रहे दुर्व्यवहार के प्रति लोगों में जागरुकता पैदा करना है जिससे वरिष्ठ नागरिकों के साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार में कमी हो सके।

दुनिया भर में हालत :

बुजुर्गों के लिए काम करने वाली संस्था 'एजवेल रिसर्च एंड एडवोकेसी सेंटर' के अनुसार 52.4 प्रतिशत वृद्धजनों का उत्पीड़न होता है और उनके साथ गाली गलौच तथा अभद्रता की जाती है। जिन बुजुर्गों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया है उनमें 56 प्रतिशत 60 से 70 के बीच की उम्र के हैं जबकि 30.2 प्रतिशत 71 से 80 तथा 13.7 फीसदी 81 से ज्यादा उम्र के हैं।

भारत में बुजुर्गों का सम्मान :

जहां तक भारत का प्रश्न है हमारी बुजुर्गों का सम्मान करने की पुरातन संस्कृति है। लेकिन पिछले कुछ दशकों से इस संस्कृति में भी भारी बदलाव देखने को मिल रहा है । एक समय था जब पश्चिमी देशों में बच्चों के लिए क्रेच और बुजुर्गों के लिए 'ओल्ड होम्स' बढ़ते जा रहे थे लेकिन हमारे देश में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी और इस व्यवस्था की जरूरत इसलिए भी नहीं थी क्योंकि भारतीय माता पिता अपने बच्चों से स्नेह और अपने बुजुर्गों का सम्मान करते थे।

बच्चों ने ठुकराया :

अगर आज देशभर में हजारों की संख्या में वृद्ध आश्रम खुल गए हैं ,इनमें काफी बड़ी संख्या में बुजुर्ग रह भी रहे हैं। स्पष्ट सी बात है कि यें वें बुजुर्ग हैं जिन्हें या तो अपना घर और बच्चे रास नहीं आए या फिर उनके बच्चों ने उन्हें ठुकरा दिया अथवा वें इन बुजुर्गों को अपने जीवन में बाधा मानने लगे थे ।

एकल परिवार प्रथा :

इसमें दो राय नहीं है कि हम संयुक्त परिवार प्रथा से एकल परिवार प्रथा में आ गए हैं । महानगरीय संस्कृति में तो अब संयुक्त परिवार बहुत ही कम देखने को मिलते हैं। आज के अर्थ प्रधान युग में परिवार के समस्त सदस्य कमाने के लिए नौकरी या दूसरे उद्यमों में इस तरह लग गए हैं कि उनके लिए बुजुर्गों की देखभाल करना एक मुश्किल काम हो गया है जिसके चलते हुए वृद्ध लोगों को वृद्ध आश्रम में भेजने की प्रवृत्ति में भारी वृद्धि हुई मगर असली बात तो यह है कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आते -आते विचार,चिंतन, खान-पान रहन-सहन के तौर तरीके सब बदल जाते हैं और बुजुर्ग घर के बच्चों एवं युवाओं को इन मुद्दों पर टोकते रहते हैं और उनकी यह टोका - टोकी आज के युवा दंपत्ति और उनके बच्चे बहुत कम ही सहन कर पाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप या तो बुजुर्गों की अनदेखी शुरू हो जाती है अथवा उन्हें पुरातन पंथी कहकर हाशिए पर डाल दिया जाता है । बस, यही से बुजुर्गों से दुर्व्यवहार एवं उनकी उपेक्षा का एक अंतहीन सिलसिले के रूप में शुरू हो जाता है।

पारिवारिक स्तर पर दुर्व्यवहार :

यदि आंकड़ों पर निगाह डालें तो आज 80 बरस से ज्यादा उम्र के लगभग 70% बुजुर्गों के साथ पारिवारिक स्तर पर दुर्व्यवहार किया जाता है। जबकि 60 से 70 वर्ष के बुजुर्गों में भी यह दुर्व्यवहार का प्रतिशत लगभग 35 से 40% है जो बहुत ही दुखद है।

कैसे - कैसे दुर्व्यवहार :

यदि बुजुर्गों से दुर्व्यवहार का विश्लेषण किया जाए तो यह दुर्व्यवहार वाचिक यानी बोलकर, मानसिक ,शारीरिक एवं भावनात्मक तथा आर्थिक स्तर पर किया जाता है । बुजुर्गों से ऊंची आवाज में बात करना, उन्हें फटकारना, उनकी बातों का मजाक उड़ाना, बात- बात में उनकी कमियां निकालना, उन पर तानाकसी करना, उनकी शारीरिक अक्षमता का फायदा उठाकर मारपीट करना ,उनके जमा किए हुए पैसों या पूंजी का उनकी अनुमति के बगैर ही अपनी इच्छा से उपयोग करना, उन्हें पेंशन व फंड आदि देने के लिए विवश करना, उन्हें यह अहसास कराना कि वें किसी काम के नहीं रहे हैं जैसी अनेक बातें शामिल हैं । यदि हम अपने आसपास निगाह डालें इस प्रकार की घटनाएं आमतौर पर होते हुए देख सकते हैं ।

मेहमानों के सामने भी अपमान:

प्राय: देखने में आता है कि जिस मकान को बुजुर्ग अपनी जीवन भर की कमाई से बनाते हैं उसी मकान में उनके वृद्ध होने पर उनके रहने का कमरा शायद सबसे छोटा एवं ऐसा कमरा होता है जो बहुत सुविधाजनक

नहीं होता। यदि बहू बेटा किसी बड़े पद पर हो और उनके माता-पिता या दादा -दादी ऐसे पदों पर न रहे हों तो प्राय: घर में आने वाले ऊंचे ओहदे एवं रसूख वाले लोगों से उन्हें मिलने भी नहीं दिया जाता है । यदि वें स्वयं मिलने या बात करने आ भी जाते हैं तो कई बार तो मेहमानों के सामने ही अन्यथा उनके जाते ही इन बुजुर्गों का अपमान शुरू हो जाता है जो कई बार तो कई कई दिनों या हफ्तों तक चलता है और यह उनका मनोबल तोड़ देता है।

अभद्रता से बातचीत :

अब चूंकि बुजुर्ग शारीरिक व मानसिक रूप से इतने सबल नहीं रह जाते हैं जितने में युवावस्था में थे । तो न केवल परिवार अपितु बाहर भी उनके साथ दुर्व्यवहार करना आम बात है । उदाहरण के लिए बस या रेलवे के टिकट लेने में, टेलीफोन, बिजली व पानी आदि के बिल जमा करवाने में ,बाजार से फल , सब्जी आदि खरीदते समय उनके साथ धोखाधड़ी एवं अभद्र तरीके से बातचीत करना उन पर अभद्र कमेंट करना बहुत आम हो गया है।

बुजुर्ग भी उत्तरदायी:

ऐसा नहीं कि पारिवारिक स्तर पर दुर्व्यवहार के पीछे केवल युवा पीढ़ी ही जिम्मेदार हो । कई बार कुछ होते हैं । उनके स्वभाव में एक चिड़चिड़ापन, हठधर्मिता, केवल अपनी ही बात मनवाने की ज़िद, हर नई बात पर आपत्ति करना नई पीढ़ी को उकसा देता है । कुछ बुजुर्ग शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हुए भी अपना सारा काम बच्चों से ही करवाना चाहते हैं जो उनके लिए संभव नहीं होता और फिर परिणाम उपेक्षा व अनदेखी वाले दुर्व्यवहार के रूप में सामने आता है । कुछ बुजुर्ग बच्चों से तो यह अपेक्षा करते हैं कि वें उन्हें अपनी सारी बातें बताएं लेकिन अपनी चीजें या बातें वे बिल्कुल शेयर नहीं करते इससे भी विवाद पैदा होते हैं।

बदलें युवा, सीखें बुजुर्ग:

यदि बुजुर्गों से दुर्व्यवहार की प्रवृत्ति को रोकना है तो युवाओं एवं बुजुर्गों दोनों को ही इस बारे में आगे आना होगा । जहां युवाओं को बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए, उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, उनसे शिष्टता से बात करनी चाहिए एवं उनके सलाह मशवरा का सम्मान करना चाहिए । वहीं युवाओं की भावनाओं एवं उनके जोश तथा ऊर्जा को बुजुर्गों को भी स्वीकार करना चाहिए । हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति को त्याग कर बुजुर्ग जितना आत्मनिर्भर बनेंगे उतना ही उनका आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास भी बना रहेगा। समय के साथ यदि बुजुर्ग नई तकनीकी सीख लें बच्चों से

टोका - टोकी कम से कम करें, अपने स्वास्थ्य का यथासंभव खुद ध्यान रखें तो कोई वजह नहीं कि बुजुर्गों से दुर्व्यवहार की आधी से ज्यादा समस्या तो स्वयं ही हल हो जाएगा!

डॉ० घनश्याम बादल

चलो फिर से आज वह नजारा याद कर लें
शहीदों के दिल में थी वो ज्वाला याद कर लें
जिसमें बहकर आजादी पहुंची थी किनारे पे
देशभक्तों के खून की वो धारा याद कर लें।।

स्वतंत्रता दिवस

बृजेश कुमार

ए मेरे वतन के लोगों, जरा आंख में भर लो पानी

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी

जब घायल हुआ हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी

तब तक थी सांस लड़े वो, फिर अपनी लाश बिछा दी

संगीन पे धर कर माथा, सो गए अमर बलिदानी

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी!

(कवि प्रदीप)

आज भारत के लोग अपना 75वा स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं! क्योंकि इसका कारण यह है कि 200 सालों की गुलामी के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र राष्ट्र बना! यह स्वतंत्रता इतनी सस्ती नहीं थी इसके बदले हमारे हजारों लाखों भारत माता के वीरों ने अपने प्राणों की बलिदान देकर हासिल की थी! जबकि स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार होती है! इसके उपलक्ष्य में हर 15 अगस्त को भारत की स्वतंत्रता की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाता है! इस दिन प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को फहराते हैं तथा जन गण मन राष्ट्रगान गाते हैं! देश की रक्षा में शहीद तथा बलिदान हुए सेनानियों की याद में इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती

है! और सेनाये अपना शौर्य पराक्रम दिखाती है! छोटे-छोटे बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं!

सर्वप्रथम 15 अगस्त 1947 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लाल **किले** पर झंडा फहराया और कहां –

"वर्षों की गुलामी के बाद यह वह समय है, जब हम अपना संकल्प निभाएंगे और अपने दुर्भाग्य अंत करेंगे!"

आज 75 वर्षों के बाद हम अपने कितने संकल्पों को पूरा कर पाए हैं यह सोचने का विषय है! इन 75 वर्षों में हम जिन स्थितियों तथा परिस्थितियों से गुजरे हैं उन्हें बदला नहीं जा सकता! लेकिन आने वाले भविष्य को तो सुधार सकते हैं! अपने राष्ट्र की गौरवमयी संस्कृति तथा अपनी मातृभाषा से विश्व को परिचित करा सकते हैं! हम इतना तो कर सकते हैं कि अपने राष्ट्र के प्रति जो कर्तव्य हैं उन्हें पूरी शिद्दत तथा ईमानदारी से निभाएं! राष्ट्र की एकता, अखंडता को बनाए रखने के लिए भरपूर कोशिश करें! ताकि हमारे राष्ट्र सही दिशा में आगे बढ़ सके! वैसे तो 15 अगस्त तथा 26 जनवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित है! तथा सरकारी दफ्तरों और शिक्षण संस्थानों में भी झंडा फहराया जाता है! इस दिन लोगों के मन में देश के प्रति समर्पण तथा देशभक्ति से ओतप्रोत रहते हैं!

महान क्रांतिकारी एवं क्रांति के प्रणेता श्री अरविंद का जन्म भी 15 अगस्त 1872 को कोलकाता में हुआ उनके पिता के.डी. घोष अंग्रेजों के प्रशंसक थे, लेकिन उनके चारों बेटे अंग्रेजों के लिए सिरदर्द बन गए थे! महर्षि अरविंद ने अपने भाषण तथा अखबार वंदे मातरम में प्रकाशित लेखों के द्वारा अंग्रेजी सरकार के दमन नीति कड़ी निंदा की थी! उन्हीं

के आह्वान पर हजारों बंगाली युवको ने देश की स्वतंत्रता के लिए हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया!

आजादी की यह सुनहरी किरण बहुत अंधेरी रातों के बाद आई थी! आजादी का यह दीपक बार बार बुझ जाने पर भी अपने लक्ष्य को हासिल कर चुका था! इतना ही नहीं था कि मौत को गले लगाने वाले लोग अपने सपने को साकार देखकर स्वर्ग में आनंदित हो रहे होंगे! यही वह गौरवशाली क्षण था जो भारत के लोग अपनी आजादी का आभाश विश्व को करा रहे थे!

आज आजादी के 75 वर्षों बाद भी हमारा देश आतंकवाद, जनसंख्या विस्फोट, घुस्पेठी,बेरोजगारी ,गरीबी ,चिकित्सा आदि के लिए जूझ रहा है! ऐसी हजारों समस्याएं आज हमारे सामने प्रत्यक्ष खड़ी है अतः हमें इस 75 वे स्वतंत्रता दिवस पर यह संकल्प करना चाहिए कि राष्ट्र में जो समस्या पनप रही है उनका शीघ्र निस्तारण हो ! भारत के नागरिक होने के नाते स्वतंत्रता का दुरुपयोग ना करें और ना ही किसी करने दें! राष्ट्र की एकता में बाधा डालने वाले तत्वों को नष्ट कर,राष्ट्र की एकता और अखंडता को अक्षय ने बनाए रखना ही हमारी प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए! तभी हम आजादी के महत्व को समझ पाएंगे!

जब देश में थी दीवाली, वो खेल रहे थे होली

जब हम बैठे थे घरों में, वो झेल रहे थे गोली

थे धन्य जवान वो अपने, थी धन्य वो उनकी जवानी

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी!

सब जल्दी में है

(प्रियदर्शी खेरा)

जब से धरती पर कोरोना का प्रकोप हुआ है,रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध छिड़ा है और प्राकृतिक दुर्घटनाओं का सिलसिला बढ़ा हैं,हर कोई 'काल करे सो आज कर,आज करे सो अब' में विश्वास करने लगा हैं। सब जल्दी में हैं, आशंकित हैं, कहीं कुछ हो न जाए। एक दिन पत्नी के साथ टीवी में युद्ध समाचार देख रहा था, इधर बम फटा, उधर पत्नि ने मिसाइल छोड़ी, "सुनो जी, पप्पू अठारह का हो गया,अपने जीते जी उसकी शादी कर दो, पोते का मुंह देख लेंगे। हम भी कुछ साड़ी-जेवर ले लेंगे, नहीं तो कल क्या हो किसने देखा? अगर अतृप्त गए तो आपको ही परेशान करेंगे।"

यहां तक तो ठीक था,एक दिन पिताजी फट गए, बोले, "चारों धाम तो हो गए, अब तो तुम्हारी अम्मा के साथ स्विजरलैंड जाने की अंतिम इच्छा है, इसी को पूरा करा दो। कल किसने देखा, नहीं तो तुम्हें पितृदोष लगेगा।"

जैसे हम,बैसे सब, विपक्षी दल भी अब जल्दी में हैं, सब नेताओं की एक ही अंतिम इच्छा, लाल किले से झंडा फहराना, पर कैसे पूरी हो? सब मिलकर प्रशान्त किशोर के पास गए।प्रशांत जी ने हिसाब लगाया,सभी को प्रधान मंत्री बनाए जाने में पूरी शताब्दी निकल जाएगी। उन्होंने सुझाव दिया कि जैसे चार उप मुख्यमंत्री हो सकते हैं तो दस प्रधानमंत्री क्यों नहीं? केवल संविधान संशोधन ही तो करना है।फिर लाल किले पर एक साथ दस झंडे लगवा देंगे, सब एक साथ फहरा देना,सबकी इच्छाएं पूरी, पर पहले एक तो हो जाओ।

उक्त प्रस्ताव सुन कर दिल्ली वाले साहब खांसते हुए इलाज के लिए निकल लिए, सबसे पुरानी पार्टी के चिर युवा नेता सलाह मशविरा के लिए विदेश यात्रा पर चल दिए, दीदी भतीजे से राय लेने चल दीं, नेताजी के प्रयोग धर्मी पुत्र नए समीकरण बनाने में लग गए। महाराष्ट्र वाले साहिब बोले,ये सब बातें चुनाव के बाद। हमने महाराष्ट्र में सफल प्रयोग किया है।

खैर, यह हुई बड़े लोगों की बात, अब हम अपनी सुनाए।कोरोना कम होने पर दो साल बाद पार्क में टहलने गये, कोई पुराना साथी नहीं दिखा,एक परिचित से पूछा तो मुझे देख कर आश्चर्य से बोले, "अरे!आप अभी भी हैं, ईश्वर आपको लंबी उम्र दे। क्या बताऊं साहब, उनका

कुछ मालूम नहीं पड़ा, वे जल्दी में थे, जब तक मालूम पड़ा, निकल लिए।" मैंने कहा, "बड़ी जल्दी निकल लिए।" तो उसने दार्शनिक भाव से उत्तर दिया, "जीवन का क्या ठिकाना?आप भी दो साल से नहीं दिखे तो हमें लगा आप निकल तो नही लिए! आपको देखकर डर लग रहा है, आप भूत तो नहीं! आपके साथ के सभी भगवान को प्यारे हो गए, आप अशरीरी स्वरूप में फिटनेस के लिए मॉर्निंग वाक पर तो नहीं आए। कल अशोक जी को, स्वामी प्रसाद एक पेड़ की टहनी पर शीर्षासन लगाते हुए दिखे।आपको पता है, स्वामी जी को गए छै माह हो गए,पिछली लहर में निकल लिए थे। आजकल भूत भी हेल्थ कॉशस हो गए हैं।"

मैंने राहत की सांस ली कि मैं जिंदा हूं।

एक दिन मेरे मित्र अपने चौदह वर्षीय पुत्र को डांट रहे थे,"कैसी क्रिकेट खेलता है, कब नेशनल खेलेगा? सचिन सत्रह में खेला था। तू अब तक रणजी नहीं खेला, जल्दी कर, प्रलय की प्रतीक्षा कर रहा है क्या? क्रिकेट भी दिनों से उतरकर घंटों में, घंटों से मिनटों में आ गई, दुनिया कितने मिनट की बची है,ऊपर वाला जाने! कुछ कर ले ।"

एक दिन तो हद हो गई, मैं अपने मित्र के पुत्र की प्रथम वर्षगांठ पर गया। चिरंजीव रुदन कर रहे थे और परिवार के सदस्य ध्यान से सुन रहे थे। बच्चे की मां बोली,"देखो बेटे ने कितना स्पष्ट अ ऽऽऽ-- बोला,चलो इसे स्कूल डाल देते हैं,इ उ --- वहां सीख जाएगा।"

तभी पिताश्री बोले," ध्यान से सुनो, पप्पू पंचम स्वर में रोया। पूर्व जन्म में जरुर बनारस घराने का रहा होगा, संगीत सिखाते हैं, लिटिल चैंप बनेगा।"

चाचा श्री ने जोड़ा, "नहीं फ्यूजन में रोया, कभी सितार के स्वर में रोता है, कभी गिटार के। इसे तो अनुष्का शंकर के पास भेजेंगे।"

दादा श्री कहां पीछे रहने वाले थे, उन्होंने कहा, "अपना पप्पू तो पक्के राग में रोया, पूर्व जन्म का तानसेन है, शास्त्रीय संगीत का अच्छा मार्केट है, वही सिखाते हैं। ज्यादा कंफ्यूजन नहीं,कल कहां परमाणु बम फूट जाए, कोई ठिकाना नहीं?जो करना है,अभी कर लो।"

मैंने एक बार भतीजे से पूछा, "बेटा गणित क्यों ली, बायोलॉजी क्यों नहीं?"

वह गंभीरता से बोला, "डॉक्टर बनते बनते बूढ़े हो जाएंगे, इक्कीस साल में इंजीनियर,इधर केम्पस,उधर पगार। कब तीसरा विश्व युद्ध हो जाए और कौन निकल ले, कोई कुछ नहीं कह सकता।हम जिंदगी का आनंद ही न ले पाए, ऐसी पढ़ाई से क्या मतलब।

मैं उसके तर्क सें निरुत्तर हो गया। आजकल सभी बड़ा आदमी बनने की जल्दी में है। लाॅक डाउन में तो गजब हो गया,किराने वालों ने एक्सपायरी डेट का सामान मनमानी कीमत

में निकाल दिया, अड़गम बड़गम सारा सामान खपा दिया। पांच रुपए की तंबाकू पचास में निकाल दी।मजेदार बात यह रही कि क्रेता भी बेवकूफ बन कर अपने आप को अनुग्रहित अनुभूत कर रहे थे। सब्जी वाले दूने भाव में सब्जी देकर एहसान कर रहे थे। इसी प्रकार नर्सिंग होम्स, औषधि विक्रेता भी अमीर बनने की दौड़ में पीछे नहीं रहे। सब करोड़पति बनने की जल्दी में थे। जिसे जहां अवसर मिला उसने आपदा में अवसर बनाया।

अब एक सरकारी घटना सुनिए।एक बार एक उच्च अधिकारी अपने मातहत इंजीनियर से बोला, “भाई छः माह में ताजमहल बना दो।“

इंजीनियर ने पूछा, “इतनी जल्दी कैसे बनेगा?”

अफसर बोले,”शाहजहां के समय कितने कारीगर काम करते थे?”

“पता नहीं, बीस हजार तो होंगे।“ उसका उत्तर था।

अफसर ने बात पकड़ ली और कहा,”तो मशीनें लगाओ, नरेगा में बहुत मजदूर हैं, एक लाख लगा दो, मनी इज नो प्रोब्लम। नेताजी की हार्दिक इच्छा है , उनका नाम भी शाहजहां की तरह इतिहास में लिखा जाए। उनकी प्रेमिका कोमा में है। एक दिन चले या 6 साल कोई ठिकाना नहीं कल का कोई ठिकाना नहीं।“

“पर, सर यह अनुचित है। यह तो सरकारी स्तर पर प्राइवेट काम हो गया।“ इंजीनियर ने असहमति दर्शाई।

“तो क्या शाहजहां ने अपने पैसे से मुमताज महल के लिए ताजमहल बनवाया था। तुमने अपने गांव में अपने खेत के लिए जो सड़क बनवा ली,क्या अपने पैसे से बनवाई ?”अफसर ने पूछा और कहां “बाबा नास्त्रेदमस प्रलय की भविष्यवाणी कर गए हैं,कब ताजमहल डूब जाए,पता भी नहीं लगेगा। तुम अपना काम करो, ताजमहल बनाओ,आनंद लो और दो।“

“जी सर, अगर प्रलय नहीं आई तो आप हमें बचा लेना। मेरे बच्चे छोटे-छोटे हैं।“इंजीनियर हथियार डालते हुए बोला।

आप भी याद कीजिए,आदमी किस कदर जल्दी में है।मेरे पिताजी की शादी में सात दिन लगे थे। मेरी शादी दो दिन में हुई और बेटे की बारात सूर्यास्त के बाद गई सूर्योदय के पहले लौट आई। फ्रेश होकर कर गए थे घर आकर ही फ्रेश हुए।

एक दिन नगीना बाबू रास्ते में मिल गए,बोले, “एक सप्ताह से कपाल भांति और अनुलोम विलोम कर रहा हूं, वज़न है कि कम नहीं हो रहा। इस समय सब अनिश्चित है,अगर जल्दी निकल लिए तो अर्थी उठाने में आप को ही समस्या आएगी।“ मैंने मन ही मन सोचा,

अजीब दुनिया है,नगीना बाबू का वज़न कम नहीं हुआ तो मेरी समस्या।पचास साल खुद खाया, अब भी खाए जा रहे हैं, वज़न कैसे कम हो ?मैंने झुंझला कर कहा, "दादा खाना कम कर दो, वज़न अपने आप कम हो जाएगा?"

"मैं तो खाने के लिए जी रहा हूं, रसगुल्ला खा कर डायबिटीज की दवाई ले लेता हूं। कल किसने देखा?कम से कम खा पीकर मरो।"उनका उत्तर था। आगे बढ़े तो पीतम महाराज मिल गए।पीतम महाराज नए-नए ध्यानी बने थे,अपनी सुनाने लगे , "एक महीने से ध्यान लगा रहा हूं,लगता ही नहीं।" मैंने पूछा, "आसन सिद्ध हुआ!" वह बोले," जो सुख कर ,वही हितकर।" मैंने फिर पूछा, "यम,नियम,संयम, अपरिग्रह की क्या स्थिति है?" उन्होंने कहा, "अब समय किसके पास है, जो करना है अभी करना है। हमें मंजिल पता है,बस एक बार कुंडली जागृत हो जाए, जीवन सफल हो जाए।"

मैंने कहा, "लगे रहो दो चार जन्मों में खुल ही जाएगी।"

एक युवा सन्यासी तो बाबाओं से भगवान का पता पूछते रहते हैं, पता मिल जाए तो भगवत दर्शन हो जाएं। नगीना बाबू को वज़न घटाने की जल्दी है, पीतम को ध्यान की और सन्यासी को भगवत दर्शन की।इसलिए कोई पन्द्रह दिन में वज़न घटा रहा है, कोई महीने भर में भगवान से मिल रहा है।इनकी दुकानें खूब चल रही है, क्योंकि सब जल्दी में है। अब आप समझ गए होंगे,सब लोग किस कदर जल्दी में हैं,हम भी जल्दी में हैं, हमें भी दूसरा व्यंग लिखना है, नमस्कार, फिर मिलते हैं।

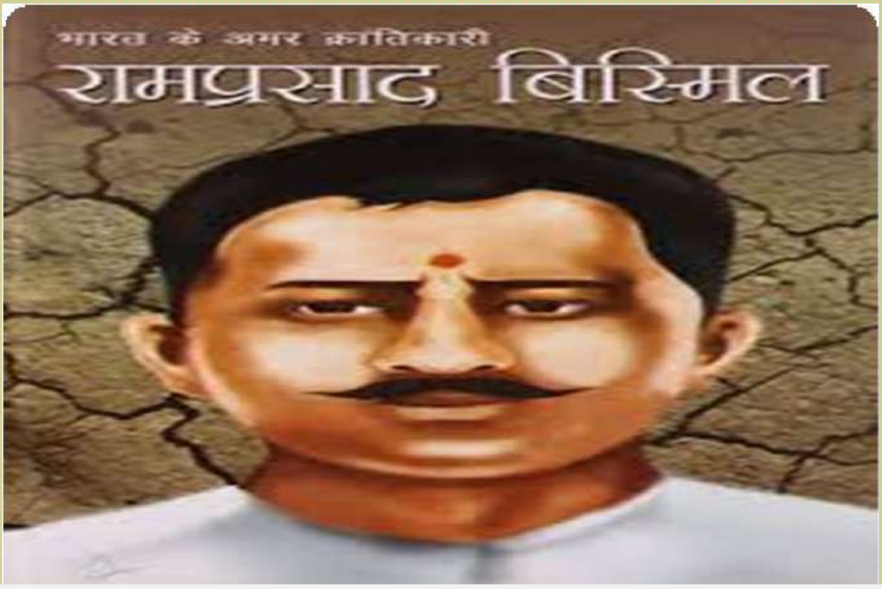

भारत के अमर क्रान्तिकारी

आह्वान

गिरेंद्र सिंह भदोरिया

यह समय नहीं आरोपों का,
गलती पर उठते कोपों का।
उत्तर देना है तनी हुई,
दुश्मन की शातिर तोपों का।।

बैठेंगे फिर बतिया लेंगे,
बाहों में भर गफिया लेंगे।
पर आज अगर हम चूके तो,
दुश्मन हिमगिरि हथिया लेंगे।।

सीमा पर डटे जवानों की,
भारत माँ के दीवानों की।
हिम्मत को साठ गुना करना
अलबेलों की मस्तानों की।।

चहुँ ओर शोर है नारों का,
मक्कारों के नक्कारों का।
बटमारों का मुरदारों का,

मतलब परस्त गद्दारों का।।

गम्भीर विषय है धीर धरो,
उपहास हास को चीर धरो।
यदि ऐसा नहीं किया तो फिर,
परिणाम सुनो शमशीर धरो।।

परिहास कलंकित कर देगा,
उपहास कलंकित कर देगा।
वाणी पर संयम रखा न तो,
इतिहास कलंकित कर देगा।।

पीढ़ियाँ सुनेंगी जब निन्दा,
कोसेंगीं मर जाता जिन्दा।
जयचन्द मीर जाफर जैसी,
कालिख कर देगी शर्मिन्दा।।

अन्तरतम तक में सुलग आग,
जब धधक रही हो जाग जाग।
सुन ध्वंस राग खटराग त्याग,
अपनाने बैठे वीतराग।।

गृह युद्ध नहीं ग्रह युद्ध करो,
कारा को कर से शुद्ध करो।
जीवन की जय लिख दो पहले,
फिर खुद को गौतमबुद्ध करो।।

इसलिए उठो स्वर में स्वर दो,
सीमा के प्रहरी को वर दो।
आहुति की वेदी पर हैं जो,
उनको निश्चिन्त निडर कर दो।।

कह दो कि समय हुंकारों का,
बस आग और अंगारों का।
तू - तू मैं - मैं का समय नहीं,
है समय धनुष - टंकारों का।।

यह महाप्रलय की बेला है,
भूखण्ड वलय की बेला है।
साहस की अग्नि परीक्षा है,
लय और विलय की बेला है।।

जल्लादों को जल्लाद कहो,
फौलादोँ को फौलाद कहो।
दुश्मन को मुर्दाबाद कहो,
भारत को जिन्दाबाद कहो।।

बन मृत्यु द्वार आ धमकी है,
तलवार धार धर चमकी है।
दुश्मन गुर्राया है फिर से ,
परमाणु बमों की धमकी है।।

पल पल खल जहर उगलता है
सुन कर धक् धैर्य उछलता है।
किस तरह हृदय को शान्त करूँ,
नस नस में खून उबलता है।।

यों तो हम शान्ति मसीहा हैं,
गीतों से भरे पपीहा हैं।
कोई अरि दिखलाए उँगली,
उस रिपु के लिए मलीहा हैं।।

इसलिए देश के वीरों का,

मानवता रक्षक हीरों का।
आवाहन करता हूँ खुलकर,
योद्धाओं का रणधीरों का।।

हे तरुण तनिक हुंकार भरो,
रणचण्डी का उच्चार करो,
भारत माता का धरो ध्यान,
अरि की छाती पर वार करो।।

हे अग्निपुत्र! अद्भुत् चरित्र,
तू यत्र तत्र सर्वत्र मित्र।
भारत माता का चरण राग,
कर दे विचित्र भू को पवित्र।।

हे धीर - वीर ! तू निर्विवाद,
उठबजा बिगुल कर सिंह नाद।
होने दे अरि का आर्त्तनाद,
भीषण निनाद कर शंखनाद।।

डगमग-डगमग धरती डोले,
विकराल काल मुँह को खोले।

नक्षत्र टूटने लग जाएँ,

बस कर बस कर अम्बर बोले।।

इस तरह धूम्र तूफान उठा,

छा उठे हृदय में कुपित छटा।

जो हैं आतंक समर्थक सब,

उनकी जिह्वा को धूल चटा।।

क्षर आदि आदि को नाप उठे,

इति नये सृजन को भाँप उठे।

फिर एक देश की क्या बिसात,

ब्रह्माण्ड समूचा काँप उठे।।

करुणा से दूर कहर बनकर,

क्रूरता कसाई सी भरकर।

दुश्मन पर टूट पड़ो बोलो,

बम बम जय महाकाल हरहर।।

कर उठे दुश्मनी चीत्कार,

बस त्राहि-त्राहि की हो पुकार।

हा हा खाए गिड़गिड़ा उठे,

हर बैरी मुँह से बार बार।।

वीर ! हाथ से जला दिखा,
उस शौर्य शक्ति कीअग्निशिखा।
जिस पर रण जयी शहीदों का,
अजरत्व लिखा अमरत्व लिखा।।

ऐसी भीषण ज्वाला बरसा,
बम तोप बाण भाला फरसा।
इस तरह चला कर अस्त्र शस्त्र,
दुश्मन को कुछ ऐसा तरसा।।

बड़बड़ा रहे भड़भड़ा उठें,
तड़तड़ा रहे तड़पड़ा उठें।
फड़फड़ा रहे हड़बड़ा उठें,
गड़गड़ा रहे गिड़गिड़ा उठें।।

फुलफुला रहे पिलपिला उठे
तुलतुला रहे तिलमिला उठें।
कुलबुला रहे किलबिला उठें,
बुलबुला रहे बिलबिला उठें।।

विप्लव को कविता सत्य करे,

ज्वाला में ज्वाला गत्य करे।

षोणित की सरिताएँ फूटें,

जब मृत्यु ताण्डव नृत्य करे।।

आभास बदलने वाला है,

विश्वास बदलने वाला है।

भूगोल बदल जायेगा फिर,

इतिहास बदलने वाला है।।

अमरत्व फलेगा फूलेगा,

संहार हार कर भूलेगा।

चूमेगी चरण विजय तेरे,

संकल्प लक्ष्य को छू लेगा

अजीब बात है

(हरदीप सबरवाल)

हमारे यहाँ

सब कुछ आम सा है,

घरो में जब तब घुस कर कोई वर्दी वाला,

नहीं लेने लगता तलाशी

और ना ही हमारे घर की औरतो की अल्मारीयों से

उनके अधोवस्त्र निकाल कर

उन्हे दीवारो की खूँटीयों पर टांग कर

अपमानित करता है,

हमारे खेतो में

जब तब नही गिरते

आसमान से गोले या जिंदा बंब

और ना ही हमारे जिंदा बच्चे

किसी जिंदा बंब को छूकर मर जाते है,

या बीज देते है वो कोई ऐसी फसल,

जिनमें से बंदूके पैदा हो,

हमारे घरो में जवान हो रहे लड़को को

यकायक सड़क पर चलते कोई

गोली मार कर औंधे मुँह नही गिराता,

ना ही कोई उन्हे आंतकवादी बता कर घरो से

इस तरह नहीं ले जाता कि

वो कभी वापस नही आते,

पिछली सदी की बातें अब यहाँ नही घटती,

कि हम शांतिप्रिय लोग है,

लेकिन

हम उतनी ही शिद्दत से अपमानित किऐ जाते है

पोलिस थानो और चोंकीयो में जब

हम अपनी जब तब अपमानित हुई किसी बेटी

के लिऐ इंसाफ ढूंढने जाते है और

उतनी ही निर्लज्जता से चरित्र हनन होते है हमारी बेटियों के,

हमारे यहाँ किसान ना जाने क्या बीजते है

कि फसल के साथ साथ कि उग जाते है

तमाम कारण

आत्म-हत्याओ के,

नौकरी ढूंढने घर से निकलते हमारे यूवा

ना जाने क्यूं साँझ ढलते ढलते

औंधे मुँह

किसी सुने पार्क में नशे में गर्त नजर आते है,

हम लोग तुम लोगो से अलग है

कि हम शांतिप्रिय है

पर हम भी जाने क्यों हर पल

डरे सहमे से रहते है, तुम्हारी तरह

अनजानी आंशकाओ से घिरे

अजीब बात है!

रिटायरमेंट

रिटायरमेंट

पुल बनने के बाद से
नीचे की सड़क ने खो दी है
पहले सी चहल-पहल,
फाटक पर रुकने के झंझट,
और छोटी हुई दूरी ने,
सब को पुल पर ही ला दिया है,
वहां खोमचे, रेहड़ी, पटरी लगाकर,
चाट-पकौड़ी, गोलगप्पे, फल-सब्जी,
मेकअप का सामान और बच्चों के खिलौने,
बेचने वाले हॉकर्स ने,
अब नए और चहल-पहल वाले ठिकाने ढूंढ लिए है,
सड़क में भी जहां-तहां गड्ढे पड़ गए हैं,
जहां मजे से सुस्ताता रहता है अकसर
बरसात का रुका हुआ पानी,
पर फिर भी वहां,

यदा-कदा आ ही जाते हैं,

सैर करने

चंद अवकाश प्राप्त वरिष्ठ नागरिक,

मानो जश्न मना रहे हो,

अपने और उस सड़क के रिटायरमेंट का......

नयनों में

गौरीशंकर वैश्य

देखा मैंने प्यार, तुम्हारे नयनों में
सतरंगी संसार, तुम्हारे नयनों में

जाग - जागकर डूबे, गहन विचारों में
खिला रूप शृंगार, तुम्हारे नयनों में

चंचल पलकों का सहसा गिरना - उठना
छलकाता मनुहार, तुम्हारे नयनों में

देने को संदेश सप्रेम फड़कते हैं
झलक रहा आभार, तुम्हारे नयनों में

उमड़ - घुमड़ घिरते बादल सुस्मृतियों के
बरसाते रसधार, तुम्हारे नयनों में

चंद्रमुखी छवि उभरी मन के दर्पण में
प्रिय को रही पुकार, तुम्हारे नयनों में

जीवन की संगिनी बनेगी निश्चित ही
बसा लिया घर - बार, तुम्हारे नयनों में

विज्ञानकु: जय विज्ञान - 1

जय विज्ञान
महज़ नारा नहीं
रहे संज्ञान।

करें विज्ञान
निज हित को छोड़
देश हित में।

बढ़ेंगे तब
मौलिक शोध जब
करेंगे हम।

मौलिक सोचें
देखें ऐसे सपने
जो हों अपने।

भले कम हो
बजाय नक़ल के
कुछ नया हो।

+++++++++++

विज्ञानकु: जय विज्ञान - 2

जहाँ के तहाँ
अब नहीं रहिए
आगे बढ़िए।

दृष्टि अपनी
जो शोध करें हम
दिशा अपनी।

शोध करें जो
लाभान्वित हो देश
उपयोगी हो।

शोध के पैसे
खर्च हों शोध पर
समय पर।

मिलेगा ज्ञान
हो शोध पर ध्यान
कहे विज्ञान।

विज्ञानकुः जय विज्ञान - 3

होगा विज्ञान
शोध पर लगाएँ
अपना ध्यान।

सतर्क रहें
सिफ़ारिशी न आएँ
आपके यहाँ।

प्रोन्नति हेतु
झूठ न बन पाए
किसी का सेतु।

शोध में आए
जिसे विज्ञान भाए
ज्ञान बढ़ाए।

रहे ये बोध
समस्या सुलझाए
आपका शोध।

++++++++++++++

विज्ञानकु: जय विज्ञान - 4

मन बनाएँ
लोगों को समझाएँ
हम विज्ञान।

नौकरी नहीं
मिशन हो हमारा
फैले विज्ञान।

साथियों आओ
विज्ञान का प्रसार
आंदोलन हो।

जहां भी जाओ
विज्ञान प्रसार के
लाभ बताओ।

विज्ञान द्वारा
चहुँमुखी विकास
लक्ष्य हमारा

++++++++++++++

सुभाष चंद्र लखेरा

नागरमोथा

डॉ0 मृत्युंजय कोईरी

खेतों में उगने वाले घासों में नागरमोथा सबसे जिद्दी है। इसका जड़ कंद बन जाता है। घास का एक भी कंद जिस खेत में आ गया। उस खेत में साल भर के अंदर पूरा फैल जाता है। फिर उसे उघाड़ना नामुमकिन है। नागरमोथा का कंद पेट में गैस से होने वाले दर्द पर दवा का काम करता है। इसके साथ बाऊ-अदरक को मिला देने से रामवाण बन जाता है। नागरमोथा और बाऊ-अदरक को अलाव से जलाने के बाद चक्की से पिसकर चूर्ण बना लिया जाता है। आदमी से लेकर गाय-बैल और बकरी तक के पेट में गैस होने पर गुड़ के साथ दो-तीन खुराक खिला देते ही पेट का दर्द छूमंत्र हो जाता है।

हरीष कुमार के पिताजी जैसे-तैसे अपना नाम लिख लेते। एक बार हरीष के पिता सभा में अपनी बात रखी। जिस पर गाँव के मालिक राजा साहब और अन्य गणमान्य लोग हँस पड़े। वहीं एक व्यक्ति ने कहा, ‘‘अरे! देखो! मूर्ख दल का आदमी आज विद्वान बनकर आया है। वह अपनी मूर्खता का परिचय दे रहा है। हहहह! ह! ह! ह! हहह! कर सब हँसने लगे।’ ’ वह विचारणीय व सकारात्मक बात कह रहे थे। पर पड़ोसी और हिस्सेधारों में कई पढ़े-लिखे न होने के कारण गाँव की किसी सभा में अपनी बात रखने का अधिकार नहीं। उनकी हँसी के बीच ही पिता ने मन-ही-मन प्रण कर लिया। ‘‘यदि मैं एक असली धरती पुत्र हूँ, तो मेरा पुत्र को इतना पढ़ाऊँगा! इतना पढ़ाऊँगा! कि गाँव का कोई व्यक्ति न पढ़ा हो!’’

हरीष बचपन से पिताजी के साथ खेत में काम करता है। पाँच वर्ष के उम्र में गाँव के सरकारी स्कूल में एडमिषन करा दिया। पिताजी पुत्र को खेती-बाड़ी के साथ-साथ पढ़ाई में भी मन लगाने का निर्देष देते हैं। हरीष का ध्यान पढ़ाई और खेती-बाड़ी दोनों में लगता था। स्कूल जाने से पहले और स्कूल से घर आने के बाद पिताजी का साथ देने खेत चला जाता है। दो-तीन खेतों में नागरमोथा बहुत ज्यादा था। हरीष कुदाल से खोद-खोद कर नागरमोथा का कंद को चुनता है। जब दूसरे दिन षेष जगह का नागरमोथा चुनने के लिए आया। तब देखा कि कल जिधर नागरमोथा का कंद को कुदाल से खोदकर हटाया था। उसी जगह नागरमोथा उग आया है। जिसका आधा कंद कट गया था या केवल घास। हरीष बाकी खेत का नागरमोथा हटाने के बजाय पुनः उगे नागरमोथा को कुदाल से खोद कर हटाने लगा। जब फिर अगले दिन आया है। तब भी देखता है कि उसी जगह पिछले दिन के बराबर उग आया है। वह जहाँ फेंका था। वहाँ पर भी उग आया है। हरीष क्रोध में आकर कुदाल से सब को खोद डाला। लेकिन पुनः उग आता है। पन्द्रह दिनों तक नारगमोथा को खोदता रहा। पर हर दिन उग आता है।

हरीष एक दिन पड़ोस के दादाजी के साथ बकरी और गाय-बैल चराने चला जाता है। दादाजी से नागरमोथा का जिक्र करता है। दादाजी हँसते हुए कहा, ‘‘नागरमोथा! नागरमोथा! ....! वह कभी मरने वाला नहीं है! वह अमृत पीकर आया है। तुम उसे लाख खोद लो! या उसके कंद को उखाड़ फेंको! पर उसका छोटा सा कंद भी छूट जाये, तो पूरा खेत में पुनः फैल जाता है।’ ’

‘‘दादाजी पर उसे खत्म कैसे किया जा सकता है? मैं, कोषिष करके थक चुका हूँ! कोई उपाय है, तो आप बताने की कृपा करें।’ ’

‘‘हरीष देखो! मैं नागरमोथा से आधारित एक घटना बता देता हूँ। फिर तुम स्वयं ही उसका उपाय खोज लेना। एक किसान हर दिन पेड़ के नीचे बैठकर सुबह और दोपहर का खाना खाता। किसानिन पेड़ के आस-पास प्रति दिन झाड़ू करतीं। और गोबर से लिपतीं। किंतु एक नागरमोथा ठीक किसान के थाली के सामने उग आता। खाना खाते समय प्रतिदिन घास को तोड़ डालता। पर दूसरे दिन पुनः उगता। एक दिन क्रोध में आकर नागरमोथा के ऊपर ही थाली रख दी। पन्द्रह दिनों तक उसी थाली में खाना खाता रहा। सोलहवाँ दिन नागरमोथा थाली को छेद करके निकल जाता है।’ ’

गाँव के प्राईमरी स्कूल से हरीष पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। गाँव से तीन किलोमीटर दूर मिडिल स्कूल जामुदाग में नामांकन कराया। बड़े घर के बच्चे साइकिल में स्कूल जाते। वे लंच में समोसा, पकौड़ा और रसगुल्ले आदि खाते। हरीष गाँव के गरीब किसान पुत्रों के साथ पैदल स्कूल जाता। और दोस्तों के साथ लंच के समय नलकूप में पानी पी लेता। स्कूल से घर आने के क्रम में हरीष और उनके सभी मित्र पचास-पचास पैसे की इलायची दाना खरीदते। तब पचास पैसे में सौ ग्राम इलायची दाना मिलती। रास्ते में चना की भाँति एक-एक दाना मुँह में डालते। ठीक बीच सुनसान जगह के आस-पास समाप्त हो जाती। सभी इलायची दाने के समाप्त होते ही दौड़ने लगते। सुनसान जगह में सात बहनी नामक भूत रहती हैं। वे दोपहर के समय ही निकलती हैं। बच्चा को खाना देने के बहाने ठगकर, अपनी षक्ति से जमीन के अंदर ले जातीं। सात बहनी बालक से षादी करने की जिद करती। यदि बालक या व्यक्ति सबसे छोटी से षादी करूँगा, कहा तो एक-दो दिन जीवित रह सकता है। क्योंकि सभी बड़ी बहनें दामादजी को छू नहीं सकतीं। और तब तक घर वाला किसी गुनी-ओझा को बुला लिया, तो वह अपने मंत्र की षक्ति से षायद बचा सकता है। यदि वह सबसे बड़ी बहन को षादी करने को तैयार हो गया। फिर बाकी छह बहनें जीजाजी-जीजाजी कहकर एक साथ गुदगुदाने लगतीं। गुदगुदाने की हँसी से वह बच्चा या व्यक्ति हँस-हँसकर मर जाता है। दोपहर के समय सब्जी छौंकने की आवाज सुनाई देती है। यह बात हरीष और उनके मित्र को भी पता है। इसीलिए, सब डर के मारे एक-ही दौड़ में उस स्थान से आगे निकल जाते हैं।

प्रखंड के एक मात्र एस0एस0 हाईस्कूल सोनाहातू में नौवीं कक्षा में दाख़िला कराया। गाँव से हाईस्कूल की दूरी आठ किलोमीटर है। गर्मी का दिन था। हरीष और उनके साथी पहला दिन पैदल चला जाता है। घर लौटते-लौटते हरीष का पैर बहुत अधिक दर्द करने लगा। एक-दो मित्र के पैर में फफोला हो गया। सुबह हरीष

का पैर फुल कर हाथी का पैर बन गया। तीन-चार दिनों तक आँगन में भी चलना-फिरना मुष्किल हो गया। हरीष के मित्र अपने पिता से धान बेचकर सेकेण्ड-हेण्ड साइकिल खरीदवा लिये। पैर ठीक होने पर हरीष अपने पिताजी का बाजार जाने वाली साइकिल लेकर चला जाता है। और सभी मित्र अपनी-अपनी नई साइकिल में। हरीष बाजार के दिन अपने मित्र की साइकिल में चला जाता है।

मैट्रिक पास करते ही हरीष अनुमंडल के एकमात्र पी0पी0के0 कॉलेज बुण्डू के इंटरमीडिएट सेक्षन में दाखिला कराया। गाँव से कॉलेज की दूरी लगभग बीस किलोमीटर है। पिताजी सुबह मार्केट से करीब नौ-दस बजे आते। सब्जी नहीं बिकने पर कभी-कभी बारह भी बज जाता। तब पिताजी ने सबसे प्रिय बैल की जोड़ी को बेच दी। व्यापारी बैल ले जाने के लिए आ जाता है। हरीष और पिताजी बैल के सिंगों में तेल लगा रहे। उधर दोनों बैल के आँखों से आँसू निकलने लगे। फिर दोनों पिता-पुत्र हाथ में पैसा लेकर रोने लगे। जब व्यापरी दोनों बैल को एक ही रस्सी में बाँध कर ले जाने लगे। तब बैलों ने अर्षीवाद के रूप में अपना गोबर छोड़ गये। माँ टोकरी में गोबर को उठाती हुई रोने लगी। उस दिन दोपहर को कई खाना नहीं खाया। रात को दोपहर का खाना थोड़ा-थोड़ा खाकर सो गये। पिताजी अगले दिन हरीष के लिए सेकेण्ड-हेण्ड साइकिल सात सौ रुपये में खरीद दी। और बाकी पैसों से हाट जाकर एक जोड़ी बैल खरीद कर ले आये। दोनों बैल, पहले बैल की तरह ही दिखते हैं। एक किसान ने कहा, ‘‘हरीष के पिताजी तुम उन दोनों बैल को ही पुनः खरीद कर लाये हो क्या? दोनों का सिंग, पूँछ, पैर, गर्दन, रंग-ढंग और चाल-चलन में कोई पहचान नहीं सकता।’ ’

हरीष प्रतिदिन घर से कॉलेज पढ़ाई करने चला जाता है। इंटर में प्रथम श्रेणी हासिल की। बीए0 में नामांकन पी0पी0के0 कॉजेल बुण्डू में ऑनर्स हिन्दी में कराया। सुबह खेत में पिता का साथ देने के बाद कॉलेज चला जाता। अपनी लगन और मेहनत से बीए0 में प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान प्राप्त की। हरीष राँची विष्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में नामांकन कराया। माँ ने सोना का लॉकेट खरीदने के लिए कानाचूका में एक-एक रुपये करके रखी थी। वह आज कानाचूका को फोड़कर पाँच हजार रुपये निकाल दी। बाकी दो हजार और किताब-कॉफी खरीदने के लिए पन्द्रह सौ रुपये पिताजी ने धान बिककर दिये। तब जाकर राँची में रहने की व्यवस्था हो पायी। हर महीना हरीष पैसा लेने घर चला आता। पिताजी साइकिल से जामुदाग धान बिकने चले जाते। और पैसा लाकर देते। जब हरीष एम0ए0 के द्वितीय वर्ष में था। तब बहुत बड़ा अकाल पड़ जाता है। एक भी खेत में धान की फ़सल नहीं हुई। पिताजी अपना सपना पूरा करने के वास्ते दस डिसमिल का खेत बेच दी। फिर भी हरीष की पढ़ाई में किसी प्रकार की अड़चन आने नहीं दी। हरीष भी पिताजी के परिश्रम व खेत को बेकार जाने नहीं दिया। एम0ए0 में अपनी मेहनत से प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान प्राप्त की।

विभाग में पहला स्थान प्राप्त करने पर एक वर्ष अध्यापन का कार्य मिलता है। पर हरीष को चार महीने तक अधिसूचना नहीं मिली। वह आर्थिक तंगी से गुजर रहा। प्राइवेट स्कूल में महीना चार हजार तनख़्वाह पर योगदान करने पर मजबूर हुआ। जहाँ सुबह सात बजे से षाम पाँच बजे तक रूकना पड़ता। प्रतिदिन चार-पाँच कक्षाएँ लेते-लेते मुँह और गाल दर्द करने लगता। किंतु उसके बाद भी घर जाने की अनुमति नहीं।

बैठकर विद्यार्थी की कॉपी मूल्यांकन कराया जाता। हरीष पैसों के लिए मन और षरीर को जबरन रोके रखा। कभी भटकने नहीं दिया। पिता के परिश्रम और विष्वास पर खरा उतरना चाहता था।

पीएच0डी0 करने के संदर्भ में दो दिन का अवकाष लिया। पहला दिन किसी प्रोफेसर से मुलाकात नहीं हुई। दूसरे दिन एक प्रोफेसर ने कहा, ‘‘आज मैं बहुत व्यस्त हूँ। तुम कल आकर मिलो!’’ हरीष प्रिंसिपल से और एक दिन का अवकाष देने के लिए फोन से आग्रह किया। प्रिंसिपल पूरी बात सुने बिना ही फोन रख दिये। हरीष पिता के सपना को साकार करने के वास्ते प्रोफेसर से मिलने चला जाता है। प्रोफेसर ने कहा, ‘‘मेरे पास अभी खाली नहीं है। यदि मेरे साथ ही करना है, तो कुछ दिन रूकना पड़ेगा। या जल्दी है तो अन्य प्रोफेसर से कर लो!’’

हरीष चौथे दिन स्कूल चला जाता है। अपनी क्लास में नये षिक्षक को पढ़ाता देख। वह सीधे प्रिंसिपल के कक्ष में जाकर पूछा, ‘‘सर मेरे वर्ग में कौन क्लास ले रहे हैं? उसे इससे पहले कभी नहीं देखा है। क्या? नये षिक्षक बुला लिये हैं।’ ’

प्रिंसिपल चुपचाप पैसा गिनने लगे। हरीष के हाथ में बीस दिन का बाकी पैसा हाथ में थमाते हुए केवल इतना ही कहा, ‘‘कल से मत आना! तुम अपना पीएच0डी0 का काम करो आराम से!’’ हरीष सॉरी सर! सॉरी सर! कह कर माफी मांगता रहा। पर प्रिंसिपल हाँ! से हूँ! तक नहीं बोले। हरीष के ज्यादा आग्रह करने पर गार्ड को आवाज दी, ‘‘सूरजा बाबू मेरे कमरे में कोई पागल व्यक्ति चला आया है। इसे जल्दी बाहर निकालो! यह मेरा दिमाग खा रहा है।’ ’

‘ ‘जी हजूर! जी हजूर! कहाँ है? किधर गया? मैंने किसी पागल को अंदर आने ही नहीं दिया है।’ ’

‘ ‘यहाँ देखो! चेयर में चुम्बक सा लटका बैठा है।’ ’

‘ ‘सर! ये हिन्दी वाले षिक्षक हैं।’ ’

‘ ‘ये! किसी विषय के षिक्षक नहीं हैं। यह एक पागल व्यक्ति है। कुछ देर पहले ही मुझे मारने पर उतारू हो गया था। तुम्हें आवाज देते ही डर से चुपचाप बैठा है। इसे पकड़कर बाहर निकाल दो! और इज्जत से नहीं निकलता है, तो घसीटते हुए गेट से बाहर निकाल दो! यह मेरा आदेष है।’ ’

सूरजा को हरीष के बाँह में पकड़कर गेट से बाहर निकालना अत्यंत दुख पहुँचा। सूरजा की आत्मा कह रही है कि आज मैं एक षिक्षक को ही नहीं। बल्कि स्वयं को भी इस स्कूल से बाहर निकाला है। हो-न-हो किसी दिन मुझे भी इसी तरह पागल-षराबी या भिखारी बनाकर, मेरे जैसे गार्ड को आदेष देकर स्कूल से बाहर निकाल दिये जाऊँगा। सूरजा षाम पाँच बजे स्कूल से छुट्टी होने के बाद घर जाने के लिए गेट के सामने खड़ा होकर ऑटो का इंतजार कर रहा। दस मिनट तक ऑटो नहीं आने पर सामने पेड़ के चारों ओर ईंट से घेर कर बनाया गया। उस चबूतरा पर बैठने के लिए जा रहा। दिन भर प्रिंसिपल के कमरे के बाहर खड़े होकर और अपने प्रिय षिक्षक को स्कूल से बाहर निकालने पर अधिक थका-हरा महसूस कर रहा है। चबूतरा के पास से किसी

व्यक्ति की आह! आह! ......! की आवाज आ रही। सूरजा चबूतरा के पास चला जाता है। जहाँ हिन्दी के षिक्षक हरीष चबूतरा में लेटे बुखार से कराह रहे हैं। सूरजा ऑटो से सीधे हॉस्पिटल लेकर चला गया। हॉस्पिटल में डॉक्टर साहब के द्वारा दवाई और सलाइन देने के दो घंटे बाद हरीष ने कहा ''मैं कहा हूँ?''

सूरजा उनके सामने आकर सारी बातें बता दी।

हरीष की आँखों से आँसू निकलने लगे। वहीं आगे कहा, ''आप आज मेरे लिए भगवान बनकर आये। अन्यथा मेरा बचना संभव नहीं था। भगवान! आपको और आपके परिवार को सुखी रखे। मैं, आपका जितना भी आभार प्रकट करूँ, कम पड़ेगा। आपका आभार प्रकट करने के लिए हिन्दी के षब्द कोष में कोई षब्द ही नहीं है।' ' हरीष पुनः रोने लगा।

' 'सर! मैं एक गार्ड होने का केवल धर्म निभाया है। मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया है। आज आपको स्कूल से निकाल दिया गया। कल मुझे भी निकाला जा सकता है। ये! तो प्राइवेट स्कूल वालों का काम है। एक को निकालकर दूसरे को कम वेतन पर रखना। यही तो उनकी नीयत है। आपसे पहले भी कई षिक्षकों को निकाल दिये गये हैं। वेतन बढ़ाने की बारी आते ही छोटे-से-छोटे कारण पर निकाल देते हैं। आपका भी षायद अब एग्रीमेंट पेपर के अनुसार एक-दो महीने में वेतन बढ़ाने की होगी?''

' 'जी! दो महीने के बाद ही आठ हजार करने की बात थी। पर आप कब से हैं?''

' 'मैं, पीछले चार साल से हूँ। लेकिन एक बार भी वेतन नहीं बढ़ा दिये हैं। मैं, मजबूरी में कर रहा हूँ। कहीं काम मिलते ही यहाँ से चला जाऊँगा। अच्छा! ठीक है, बातें होते रहेगी। मैं, डॉक्टर साहब से मिलकर आता हूँ। यदि दवा लिखकर डिस्चार्ज कर देंगे, तो रात में रूम जाकर थोड़ा आराम किया जा सकता है। सुबह पुनः स्कूल जाना है।' '

' 'हाँ! हाँ! मैं, अब ठीक हो चुका हूँ। डॉक्टर से डिस्चार्ज करा लीजिए!''

सूरजा डॉक्टर से डिस्चार्ज कराके हरीष को रूम लेकर चला जाता है। वह भी रात भर हरीष के रूम में रूका। और सुबह उठकर सात बजे स्कूल चला गया। सूरजा के स्कूल जाने के बाद हरीष को चुपचाप बेड में लेटा देख। हरीष का रूममेट खाना खाने के लिए कहा। पर हरीष भूख नहीं है, कहकर इंकार कर दिया। रूममेट का बार-बार आग्रह करने पर थोड़ा-सा खाना खाकर सो जाता है। हरीष स्कूल से नहीं निकालने का आग्रह पिं्रसिपल से करता है। पिं्रसिपल ने कहा, ''मैंने कल ही कह दिया था कि कल से स्कूल मत आना! तुम अपना पीएच0डी0 का ही काम करना आराम से! फिर आज आ गया।''

हरीष क्रोधित होकर कहा, ''मैं एक किसान का पुत्र हूँ। आज मैं, पुस्तक और कमल की सौगंध खाकर प्रण लेता हूँ कि अपने पिता के साथ खेती-बाड़ी ही करूँगा! पर प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने नहीं जाऊँगा! खेती-बाड़ी करके एक ही वक्त खाऊँगा! पर कम-से-कम गर्व से जी पाऊँगा!''

हरीष को नींद में बड़बड़ाते हुए देख, रूममेट हरीष को हिलाने-डुलाने लगा और कहा, ‘‘क्या? नींद में बड़बड़ा रहे हो! उठो..........’’ हिलाने-डुलाने से हरीष की आँखें खुली। वह अपने बेड पर लेटा और सामने रूममेट को देख। आँखें मसल-मसल कर देखने लगा। फिर रूममेट से पूछा, ‘‘क्या? मैं, सपना देख रहा था।’ ’

‘ ‘जी हैं! मैंने आपको जगाने की बहुत कोषिष की। पर आप न जाने क्या-क्या बड़बड़ा रहे थे?’’

षाम चार बजे एक मित्र का फोन आता है। मित्र कहता है, ‘‘आज नेट का परिणाम जारी होने वाला है।’ ’ हरीष भी यूजीसी0 नेट के इम्तहान में बैठा था। दोनों मित्र यूजीसी0 नेट का परिणाम देखने स्मार्ट कैफे चले जाते हैं। हरीष के रिजल्ट में नेट क्वालिफ़ाइड फॉर असिस्टेंट प्रोफेसर लिखा। हरीष यूजीसी0 नेट पास की। अब वह सहायक प्रोफेसर बनने की योग्यता प्राप्त की। उनकी खुषी साफ झलक रही। तुरंत यह खुषखबरी घर में दी। वहीं उनके मित्र के फेल होने का दुख भी हुआ।

हरीष के मन में पुनः एक बार आगे की पढ़ाई करने की इच्छा जागी। दूसरे ही दिन पीएच0 डी0 के षोध-निर्देषक के लिए विभाग और कॉलेज के प्रोफेसरों से मिलने लगा। छह महीने में एक मैडम ने हाँ की। और सिनोप्सिस तैयार करने का आदेष दी। साल भर में प्री-रजिस्ट्रेषन की संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

खेती करने में असमर्थ पिता से पैसा माँगने में संकोच कर रहा। हरीष नौकरी की तलाष में जुट गया। तीन-चार प्राइवेट विष्वविद्यालय में साक्षात्कार दी। साक्षात्कार में एक्सपर्ट से लेकर कुलपति तक तारिफ करते। सब एक महीना के अंदर फोन करके बुला लिये जायेंगे। वहीं आगे कहते, ‘‘आपका सौ प्रतिषत निष्चित है।’ ’ विकास विष्वविद्यालय के कुलपति ने स्वयं कहा, ‘‘आप का ओके है! केवल सर्टिफिकेट जाँच करा लो!’’ सात-आठ महीने तक कहीं से फोन नहीं आया। बाद में पता चला कि विकास विष्वविद्यालय के कुलपति ने हरीष की जगह पर अपने मित्र की गर्लफ्रेंड को रख ली। हरीष को कहीं नौकरी नहीं मिलने पर निराष होकर रूम खाली करके गाँव जाने की तैयारी में था। वहीं सुबह अखबार में देखा कि एक मॉइनोरिटी कॉलेज में हिन्दी के तीन सहायक प्रोफेसर की विज्ञापन छपी है। इससे पहले दो मॉइनोरिटी कॉलेजों में अप्लाई किया था। पर साक्षात्कार के लिए बुलाया नहीं गया था। फिर भी अप्लाई करके साक्षात्कार की तैयारी में जुटा। साक्षात्कार में एक्सपर्ट प्रष्नों का जवाब सुन बहुत खुष हुए। किंतु हिन्दी के अध्यक्ष डॉ0 ए0 के0 घोष ने जवाब पर असंतुष्ठी जाहिर नहीं कर पाने पर अंत में पर्सनालिटी पर प्रष्न उठाते हुए कहा, ‘‘प्रोफेसर का विषय ज्ञान के साथ-साथ पर्सनालिटी भी होना आवष्यक है। जिसे विद्यार्थी का मन लगा रहता है। और हरीष में कोई पर्सनालिटी नहीं है।’ ’ साक्षात्कार के परिणाम आने के बाद पता चला कि तीनों में से दो यूजीसी0 नेट क्वालिफ़ाइड हैं। डॉ0 ए0 के0 घोष दोनों के गाइड हैं। दोनों से तीन-तीन लाख करके साक्षात्कार से पहले ही लिये थे। उनके पिता सरकारी ऑफिसर हैं। तीसरा कैंडिटेड डॉ0 घोष के साला की बेटी है। जो इस वर्ष एम0 ए0 पास की है। नेट0 का इम्तहान में दो बार फेल कर चुकी हैं।

केन्द्रीय विष्वविद्यालय में अनुबंध पर सहायक प्रोफेसर के चार पद की विज्ञापन अखबार में छपी। हरीष को जानकारी मिली कि केन्द्रीय विष्वविद्यालय में कोई सोर्स-सिफारिष और रिष्वत का खेल नहीं होता है।

केवल कैंडिटेड की पात्रता और ज्ञान की जाँच-पड़ताल की जाती है। एक्सपर्ट आपकी रुचि और विषेष क्षेत्र से प्रष्न करते हैं। हरीष मन-ही-मन सोचा कि ऐसा होता है, तो फिर मेरा चयन निष्चय हो जायेगा! साक्षात्कार के दिन सुबह उठकर पूजा-पाठ करके चला जाता है। जहाँ चार पद के लिए लगभग डेढ़ सौ कैंडिटेड पहुँच चुके हैं। और अब भी आ रहे हैं। सबको एक कमरे में बैठाकर क्रम से बीस-बीस कैंडिटेड ले जा रहे हैं। जहाँ सब लाइन में खड़े किये जा रहे हैं। हरीष से पहले साक्षात्कार देने वाले सभी कैंडिडेट दो से पाँच मिनट के अंदर वापस लौट रहे हैं। हरीष साक्षात्कार देने के लिए कुर्सी पर बैठा। एक्सपर्ट ने केवल नाम पूछा और केन्द्रीय विष्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे अच्छा ठीक है! कह दिये। हरीष उठकर बाहर निकला और सीधे रूम की ओर चल पड़ा। सप्ताह दिन के बाद वेबसाइट पर परिणाम घोषित किया गया। जिसमें चार पांडे जी का चयन हुआ। हरीष के गाइड का पति केन्द्रीय विष्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर हैं। जो एक दिन बातों ही बातों में कहते हैं, ''हिन्दी विभाग के नवनियुक्त चार सहायक प्रोफेसर में से दो डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे के क्लासमेट हैं। वह दोनों एम0ए0 में पचास प्रतिषत अंकों से पास किया है। बाकी दो में से एक पाण्डे जी का भतीजा है। वह दो बार में एम0ए0 पास किया है। सात बार यूजीसी0 नेट0 की परीक्षा में बैठ चुका है। चौथा डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे की पत्नी का चचेरा भाई है। वह केन्द्रीय विष्वविद्यालय में ही पाण्डे के साथ पिछले ही वर्ष पीएच0डी0 में प्री-रजिस्ट्रेषन कराया है। डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे के क्लासमेट लम्बे समय से नौकरी का जुगाड़ कर रहा था। पर कहीं जुगाड़ नहीं कर पाया था। वे दोनों पाण्डे सर से कुछ दिन पहले से मिलने आ रहा था। षायद कुछ माल-पानी भी दिया होगा! क्योंकि पिछले कई दिनों से पाण्डे सर और कुलपति को साथ में लंच के समय बाहर जाते हुए देख रहे हैं।' '

हरीष नौकरी की उम्मीद छोड़कर पीएच0 डी0 का षोध-प्रबंध भी लिखना बंद कर दिया। वह अब रूममेट के साथ रात की पार्टी में कैटरर के साथ काम करने जाने लगा। उसी बीच झारखण्ड के सभी विष्वविद्यालयों में घंटी आधारित सहायक प्रोफेसरों की विज्ञापन निकलती है। हरीष राजधानी के प्रसिद्ध राँची विष्वविद्यालय के अलावे अन्य विष्वविद्यालय में अप्लाई करता है। राँची विष्वविद्यालय में साक्षात्कार बहुत अच्छा गया। हरीष खुष था। फिर भी वह एक और विष्वविद्यालय में साक्षात्कार देने के वास्ते चला जाता है। वहाँ एक एक्सपर्ट ने विषेष क्षेत्र पूछा। और अन्य क्षेत्र से प्रष्न किया। हरीष के द्वारा विषेष क्षेत्र से प्रष्न पूछने का आग्रह करने पर उन्होंने कहा, ''क्या आप केवल अपना विषेष क्षेत्र ही पढ़ायेगा या अन्य भी?''

' 'पाठयक्रम में जो भी रहेगा। मैं, पढ़ा लूँगा!''

' 'तो फिर .....!''

हरीष एक-दो प्रष्न को छोड़ बाकी सभी प्रष्नों का जवाब दिया।

राँची विष्वविद्यालय से केवल हिन्दी से सात कैंडिटेड का चयन हुआ। जिसमें तीन एसटी0, तीन एससी0 और एक बीसी वान का। जिस विष्वविद्यालय में एक-दो प्रष्नों का जवाब नहीं दे पाया था। उस विष्वविद्यालय में हरीष का मेरिट लिस्ट में पहला नम्बर मिला। किंतु पोस्टिंग सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के नये

कॉलेज में। जहाँ न कॉलेज का पता, न ऑफिस और न कमरे का। विष्वविद्यालय के कर्मचारी से लेकर ऑफिसर तक को सही पता नहीं। बाद में उस क्षेत्र के एक चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी से पता चला कि कॉलेज एक आवासीय विद्यालय के दो कमरे में संचालित है। षिक्षक और स्टाप पेड़ के नीचे बैठकर ऑफिस का काम निपटाते हैं।

हरीष ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी को ज्ञान प्रदान करने के उद्देष्य से योगदान किया। दो कमरा होने के कारण हरीष बरसात के दिनों को छोड़ बाकी दिनों में पेड़ के नीचे बैठाकर क्लास लेता। विष्वविद्यालय के नियमानुसार एक दिन में चार क्लास लेनी है। पर हरीष प्रतिदिन चार से पाँच क्लास लेने लगा। विद्यार्थी गैस पेपर के भरोसे पास कर रहे थे। सेमेस्टर फोर-सिक्स के विद्यार्थियों को पाठयक्रम के पुस्तकों का नाम भी पता नहीं था।

प्रिंसिपल पहले पन्द्रह दिनों का पारिश्रमिक बिल नहीं भेज देते हैं। प्रिंसिपल का कहना है, ‘‘आप रुटीन तैयार नहीं किया है। और पाँच तारीख के बाद विष्वविद्यालय के पास बिल भेजने पर विष्वविद्यालय बिल को डस्टबीन में डाल देती है। केवल पन्द्रह दिनों की तो बात है! इसको छोड़ दीजिए! अब इस महीना के लिए मास्ट्रर रुटीन में क्लास दर्ज कराके अलग से अपना विभाग का रुटीन तैयार कीजिए! मैं, मास्ट्रर रुटीन के अनुसार ही बिल पास करूँगा!’’ हरीष पन्द्रह दिनों का पैसा छोड़कर प्रिंसिपल के निर्देषानुसार ही रुटीन तैयार करता है। मास्ट्रर रुटीन के अनुसार एक दिन में एक या दो ही क्लास दिखा सकता है। भले वह एक दिन में चार या पाँच क्लास लेता हो! विद्यार्थी का फॉर्म सत्यापित करना, मध्यसत्रीय परीक्षा और अन्य काम भी करना पड़ता। महीना में दस से पन्द्रह हजार का बिल पास होता। ग्रीष्मावकाष, होली, दुर्गा पूजा और अन्य अवकाष पर एक भी रुपया नहीं मिलता। उस समय रूम का भाड़ा और खाना-पीना के वास्ते तरसना पड़ता है। दस से पन्द्रह हजार का पारिश्रमिक भी हर महीना नहीं मिलता। कभी तीन माह, तो कभी छह माह या कभी-कभी एक साल या डेढ़ साल के बाद। काम स्थायी प्रोफेसर से ज्यादा कराया जाता है। पर पैसा देने के समय घंटी गिन-गिन कर।

हरीष अपना अनुभव और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी के ज्ञानवर्द्धन के लिए रूका था। एक दिन वह अपने पीएच0 डी0 के काम पर राँची विष्वविद्यालय पूछताछ और एक मॉइनोरिटी कॉलेज में साक्षात्कार देने के वास्ते राँची जाना है। प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के पास तीन दिन अवकाष के लिए आवेदन लेकर जाता है। प्रिंसिपल केवल साक्षात्कार के दिन का अवकाष पास करते हुए अगले दिन सुबह दस बजे कॉलेज में उपस्थित होने का निर्देष दिये। हरीष रात को करीब बारह बजे राँची पहुँचा। सुबह नौ बजे साक्षात्कार देने निकला। साक्षात्कार में बेतुका प्रष्न पूछे गये। वह दूसरे दिन, भोर करीब चार बजे की पहली बस के लिए निकल पड़ा। पर पहली बस खराब होने के कारण दूसरी बस में जाना पड़ा। कॉलेज ढाई बजे पहुँचता है। संयोग से प्रिंसिपल नहीं आये थे। तब से हरीष का मन कॉलेज से टूट गया। और दुखी रहने लगा।

अचानक एक दिन घर से फोन आया। माँ की तबीयत बहुत खराब है। हरीष एकलौता पुत्र है। पिता भी वृद्ध हो चले हैं। अस्पताल में पत्नी की देखभाल कर पाना असंभव है। हरीष क्लास से निकलकर प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के नाम एक आवेदन लिखा। ‘‘मेरी पूज्यनीय माताजी की तबीयत बहुत खराब है। वे अस्पताल में एडमिट हैं। मेरे पिताजी भी वृद्ध हो चुके हैं। माताजी को मेरा अत्यंत आवष्यकता है। मुझे तत्काल जाना पड़ेगा.........।’ ’ प्रिंसिपल केवल दो दिन का अवकाष पास करते हैं। प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के इस निर्णय पर हरीष क्रोधित होकर एक सफेद पन्ना में इस्तीफा पत्र लिखकर थमा दिया। और गिड़गिड़ाते हुए कहा, ‘‘मैं जीवन भर घंटी आधरित सहायक प्रोफेसर की नौकरी नहीं करूँगा! इससे अच्छा मजदूरी है। गाँव में सुबह काम पर जाओ! षाम को घर लौटते समय पैसा लेकर आ जाओ!’’

माताजी ठीक हो गयीं। हरीष माताजी को घर लेकर आ गया। दूसरे दिन कुदाल लेकर खेत जा रहा, तब पिताजी ने कहा, ‘‘बेटा! कॉलेज नहीं जाना है। कॉलेज से कब तब की छुट्टी लेकर आये हो?’’

‘ ‘मुझे कॉलेज नहीं जाना है!’’

‘ ‘क्यों?’’

‘ ‘क्यों क्या? मुझे नहीं जाना है बस!’’ कहता रोने लगा।

‘ ‘बेटा! वहाँ क्या हुआ? रोता क्यों है?’’ कहता पिताजी भी रोने लगे।

‘ ‘पिताजी! मैं, कॉलेज से इस्तीफा देकर आ गया हूँ। प्रिंसिपल केवल दो दिन की छुट्टी दे रहे थे। आप ही बताये, मैं क्या करता?’’

‘ ‘अच्छा ठीक है! तुम चिंता मत करना! एक दिन तुम्हंे अच्छे कॉलेज में सरकारी नौकरी मिलेगी!’’

हरीष हर दिन खेत में काम करने लगा। खेत में उगे नागरमोथा के कंद को खोद-खोद कर निकाल रहा। कुछ का कंद छूट जाता। सुबह उस कंद से नागरमोथा का छोटा-सा पत्ता आकाष की ओस में भिंगा आसमान की ओर ताक रहा। हरीष यह देख सोच में पड़ गया, ‘‘एक घास को मैं, प्रतिदिन काट देता हूँ। पर उसे समाप्त नहीं कर पाता। वहीं बचपन में दादाजी की सुनाई कथा स्मरण हो आता है। जिसमें नागरमोथा किसान की थाली ....। हो-न-हो मैं भी एक नागरमोथा की भाँति ही संघर्ष को जारी रखूँ! यदि नागरमोथा थाली को छेद करके निकल सकता है तो मैं क्यों नहीं? किसी-न-किसी दिन ईमानदार एक्सपर्ट से मुलाकत होगी!’’

हरीष पुनः खेती-बाड़ी के साथ षोध-प्रबंध का काम करने लगा। पीएच0 डी0 की डिग्री भी मिल गई। उधर सरकार ने एक उच्चस्तरीय कमेटी की गठन की। और राज्य के कैंडिटेड को पहली प्रथामिकता देते हुए विज्ञापन जारी की। साक्षात्कार का लाइव सीधे मुख्यमंत्री के पास। साक्षात्कार में कैंडिटेड को अकेडेमी, सेमिनार, आलेख, पुस्तक, अनुभव और साक्षात्कार आदि के टोटल मार्क्स का प्रिंटआउट दिया गया।

परिणाम की घोषणा हुई। जिसमें हरीष को पहला स्थान मिला। नियुक्ति पत्र स्वयं मुख्यमंत्री के हाथों मिली। पोस्टिंग भी मेरिट के तहत दी गयी। हरीष को राजधानी का सबसे बेहतरीन कॉलेज मिला!

भारत के अमर क्रान्तिकारी सुखदेव जी

ग़ज़ल

हमीद कानपुरी

उस घड़ी खुशदिली से मिलते हैं।
जबकहीं हम किसी से मिलते हैं।

मुस्कुराकर सभी से मिलते हैं।
आदतन हम खुशी से मिलते हैं।

कब भला तीरगी से मिलते है।
हम सदा रौशनी से मिलते हैं।

हम बड़ी सादगी से मिलते हैं।
जबकभी अजनबीसे मिलते हैं।

हिम्मतो हौसला जवां रखते,
जब उफनती नदी से मिलते हैं।

ज़हृ कुछ साथ अपने ले आते,
जो किसी नफ़रती से मिलते हैं।

पूरी तरह से बनो

डॉ शिवा धमेजा

यही सीखाया गया है मुझे ! केवल कुछ करते रहना ! रुकना हो नहीं पाता ! एक आदत सी बन गयीं है ! ये उन्हीं की शिक्षा है जिसने यहाँ तक पहुँचाया ! ज़ब भी थकान होती तो खुद से यही कह देती ! मैं कभी नहीं थक सकती'!

अभी तो पूरा बनना है ! कुछ अधूरा अधूरा है जो पूरा हुआ है लेकिन अब तक भी वो मंज़िल नहीं आई जो अपनी मंज़िल है तो'! क्या आधा अधूरा बनना !

जीवन का एक ही अर्थ है कि हमें कभी थकना नहीं चाहिए ! क्योंकि ऐसा कोई शब्द नहीं होता ! ये सब एक वास्तविक सीख की तरह है जो हमारे कर्मों से ही झलकती है ! इंसान अपने आप क़ो खुद अपने आप ही रोकता है ! ज़ब हममें अनगिनत प्रतिभा छुपी है तो फिर केवल औसत प्रतिभा क़ो बाहर क्यों लाना ! खुद क़ो निचोड़ लेना ही जीवन की सार्थकता है !

इतना निचोड़ लेना कि नकारात्मकता की हर बूंद हममें से नीचुड़ जाये ! हम पूरी तरह बनने लगे ! उस आकार में ढलने लगे जो हमारा स्वरुप है !

यही सोचते सोचते पापा के कमरे तक पहुँच गयी ! एक आवाज़ ने मेरी गहन सोच में व्यवधान डाल दिया ! बेटा थक नहीं है ! यकायक मुँह से निकल गया हाँ पापा जी.........

अरे ये थकान जैसा कोई शब्द ही नहीं बना....! थकने के बाद जो आराम मिलता है, उससे ज्यादा आराम कभी नहीं मिल सकता !

दुर्दशा

समीर उपाध्याय

अंधियारी कालरात्रि में कामान्ध असत्य सूनसान सड़क पर ताक लगा कर बैठा था। इतने में सत्य वहां से गुजरता हुआ दिखाई दिया। असत्य ने उसका रास्ता रोक लिया और पूछा- “क्या मेरी कामना-पूर्ति करोगे? मुंह मांगी रकम दूंगा।“

सत्य- “हरगिज़ नहीं।“

असत्य- “अगर मेरा कहा नहीं माना तो मुझे जबरदस्ती करनी पड़ेगी। कैसे बच पाओगे मुझसे?”

सत्य- “मेरा रास्ता छोड़ो और मुझे आगे जाने दो।“

असत्य- “चुपचाप अपने आप को मेरे हवाले कर दो। तुम्हारे पास बचने का कोई रास्ता नहीं है।“

सत्य- “मेरे पास सत्य का शस्त्र है।“

असत्य- “आज़ के युग में इसकी कोई अहमियत नहीं।“

सत्य- “मैं कहता हूं मेरा रास्ता छोड़ो। वरना...।“

असत्य- “वरना क्या? सत्य का शस्त्र उठाओगे?”

सत्य- "हां, सत्य का शस्त्र।"

असत्य- "तो उठाओ शस्त्र। देखता हूं कैसे बच पाते हो मुझसे। आज़ मैं अपनी कामना-पूर्ति कर के ही रहूंगा।"

सत्य बेचारा लाचार और विवश था। भागने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं था। इतने में असत्य ने अपनी पाशविक शक्ति से उसे नीचे गिरा दिया। उसे खूब पीटा और वस्त्र हरण कर बेरहमी से बलात्कार किया। इतना ही नहीं ख़ुद के वस्त्र उतारकर सत्य के वस्त्र पहनकर वहां से चल दिया। वह अट्टहास करता हुआ चला गया । सत्य बेचारा नग्न अवस्था में सड़क के बीचों बीच पड़ा कराहता रहा। सत्य मन ही मन बोला- "हे ईश्वर! न्याय और नीति के पथ पर चलने का यही फ़ल चखाना था? क्या मुंह दिखाऊंगा लोगों को? इससे अच्छा तो यह होता की मौत आ जाती।"

इतने में एक चिर-परिचित आदमी वहां से गुजरा। सत्य की दुर्दशा देखकर बोला- "अरे! तुम्हारा ये हाल? कैसा युग आया है?"

सत्य ने आक्रोश भरे स्वर में कहा- "कलयुग है ये। यह तो ट्रेलर है। अभी आगे अचंभित कर देने वाला बहुत कुछ देखने को मिलेगा।

सत्य पागल की तरह हंसने लगा और जोर-जोर से चिल्लाया- "सत्यमेव जयते।"

चिर परिचीत आदमी वहीं पर खड़ा-खड़ा गहरी सोच में पड़ गया। "सत्यमेव जयते" सूत्र की निरर्थकता ने उसे भीतर से झकझोर दिया।

****

हाडी रानी का बलिदान

बृजेश कुमार

राजस्थान की भूमि वीरों की बलिदानों के लिए इतिहास में सुप्रसिद्ध रही है! इस भूमि को वीरों ने अपने त्याग, बलिदान, रक्त से मरूभूमि को सींचा है! यह बात किसी से अछूती नहीं है! लेकिन वीरों के साथ-साथ वीरांगनाओं के त्याग और बलिदान को हम बिसरा नहीं सकते! इस मरुभूमि में ऐसी अनेक वीरांगनाये हुई है जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की चिंता नहीं करी तथा साथ-साथ अपने पतियों को भी कर्तव्य से विमुख नहीं होने दिया! उनमें एक नाम है – हाड़ी रानी का!

हाड़ी रानी बूंदी के शासक हाड़ा चौहान की बेटी थी! उसका विवाह मेवाड़ के सलूंबर के सरदार रतन सिंह चुंडावत से हुआ! अभी विवाह को केवल सात दिन भी हुए थे तथा दोनों की अभी हाथों की मेहंदी तथा पैरों की महावर भीकी नहीं पड़ी थी! इधर चुंडावत सरदार अपनी नई- नवेली रानी के मोहपास में बंधे हुए थे! उन्हें हाड़ी रानी से इतना प्रेम था कि वह उन्हें एक पल के लिए अपनें से दूर नहीं देख सकते! दोनों अपनी वैवाहिक जीवन के सुखांत पल व्यतीत कर रहे थे! इतने में महाराज राज सिंह का दूत एक पत्र लेकर सरदार चुंडावत के कक्ष की तरफ आता है! जब दूत को बाहर खड़ा रानी देखा तो उन्होंने सरदार चुंडावत को आगाह किया और रानी दूसरे कक्ष में चली गई! सरदार चुंडावत ने जैसे ही दूत को बुलाया! उन्हें देख तेजी से ठहाके मारकर हंसने लगे! अरे मित्र शार्दुल सिंह तुम! क्या भाभी ने आज सुबह -2 ही भगा दिया है! शार्दुल सिंह चुप रहे-

मित्र शार्दुल तुम इतने चुप क्यों हो और ऐसी क्या बात है! शार्दुल सिंह ने महाराज राज सिंह का आदेश सुना दिया की औरंगजेब की सेना तेजी से बढी आ रही है और उसको रोकने के लिए महाराज ने आपको जाने का आदेश दिया है! इस संकट की घड़ी में हमें शीघ्र ही मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए! सरदार चुंडावत ने कहा कि क्षत्राणी अपने पुत्रों को इस दिन के लिए तो जनती है! लेकिन उनके मन में एक प्रश्न नें अभी खलबली मचा रखी थी कि युद्ध का क्या परिणाम होगा और रानी हाडी से वह कैसे दूर हो पाएंगे, कहीं रानी उनको भूल न जाये!

अब समय आ गया है कि उन्होंने हाड़ी रानी से युद्ध के लिए विदा लेनी चाही! हाड़ी रानी को जब यह पता चला तो उन्हें एकदम सदमा सा लगा और उन्होंने अपने आप को संभाल कर पति को युद्ध के लिए प्रेरित किया! विजय की कामना के साथ युद्ध करने की बधाई दी!

इधर चुंडावत सरदार अपनी सेना को लेकर युद्ध के लिए निकल पड़ता है! जब वह रास्ते में जाता है तो उसके मन तथा आंखों से रानी की तस्वीर ओझल नहीं होती है! वह हम समय उनकी याद में खोया हुआ रहता है! तभी वह आधे रास्ते से रानी के लिए एक पत्र लिखता है :-

" हे प्रिय! तुम मेरी अर्धांगिनी हो, तुम मुझे भूल मत जाना! मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आऊंगा! हो सके तो कोई निशानी मेरे लिए भेज देना, जिसे देखकर मेरा मन हल्का हो जाए!"

जब यह पत्र रानी हाड़ी को मिलता है तो उन्हें अपने पति कोमो में डूबा देकर मन व्यथित होता है! वह मन ही मन विचार करती है कि अगर सरदार मेरे मोह में वशीभूत होकर युद्ध करेंगे तो वह अपनी मातृभूमि के प्रति पूरी तरह दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाएंगे! रानी ने अपने सेवक को बुलाया और एक पत्र लिखा :-

" प्रिय सरदार! मैं आपको तोफे में सबसे अच्छी लगने वाली निशानी भेज रही हूं! इसे स्वीकार करना! मैं आपकी प्रतीक्षा स्वर्ग में करूंगी!"

रानी ने अपने सेवक को आदेश दिया कि आप मेरे पत्र तथा भेट को सरदार तक बिना किसी को दिखाये पहुंचाना! और हाड़ी रानी ने अपने कमर से तलवार खींच कर एक ही झटके में सिर को काट डाला! उसे थाली में रखकर सेवक को सरदार के पास भेज दिया! सरदार सेवक को आता देख अत्यधिक प्रसन्न होता है और सोचता है कि रानी ने मेरे लिए कोई अनुपम वेट और पत्र भेजा है! जैसे ही वह पत्र पड़ता है और थाली से कपड़े को हटाता है! वह बहुत दुखी होता है और मन ही मन पश्चाताप करता है कि मेरे जीवन की सबसे सुंदर चीज को मोह के कारण गवा दिया!

अब यह सब देख कर सरदार का रानी से मोहभंग हो गया! अंबे रानी के सर को अपने गले में बांध कर युद्ध में शत्रु सेना पर टूट पड़ता है! वह इतनी बहादुरी से युद्ध करता है कि शत्रु सेना भाग खड़ी होती है! उसके युद्ध कला को देख कर आज तक इतिहास में उनके ससमान सोने की मिसाल मिलना संभव नहीं है!

अंत में जब विजय हाथ लग गई तो उन्होंने अपनी तलवार से अपना सर रानी की भांति काटकर प्राणोत्सर्ग कर दिया! यह जीत सीधे शब्दों में हाड़ी रानी के त्याग और बलिदान का प्रतीक है! रानी के विचारों नें ही चुंडावत सरदार को युद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया! उन्हीं के त्याग के कारण हाडी रानी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गई! और उनका यह मातृभूमि का का बलिदान हमेशा याद किया जाएगा! इसलिए सच ही कहा गया है नारी अवला नहीं सबला है अगर वह करने की ठान ले!

चलो बाँट तौलें

डॉ आर बी भण्डारकर

बात काल्पनिक नहीं है, सच्ची है, अच्छी है।हाँ, यह मेरी किसी आत्मकथा का अंश कतई नहीं है।

थोड़ा पीछे चलते हैं।एँ... हाँ, लगभग 64,65 साल पीछे।आँगन में ,काँस के नए छप्पर की शीतल छाया में अम्मा और पड़ोस की काकी बैठी हैं,दोनों जन अपनी अपनी थालियों में चावल लिए,उनमें से कंकड़ बीन रही हैं।

इन गृहणियों ने किसी आई आई एम में पढ़ाई भले ही नहीं की है पर कोई भी इनके गृह प्रबंध-कौशल की सराहना किये बिना नहीं रह सकता। जून महीने का उत्तर पखवाड़ा शुरू हो गया है,बरसात दस्तक देने ही वाली है इसलिए चतुर गृहणियाँ पहले से ही चौमासे भर के लिए खाद्यान्न छान,बीन कर रखने की जुगत में हैं।बरसात में छान-छून करेंगे तो अनाज,मसालों में सीलन आ जायेगी,फिर फफूंदी लगने का डर रहेगा।

मैं कभी अम्मा को टुकुर टुकुर देखता तो कभी काकी को,उनकी बातें बड़े गौर से सुनता।छोटा था सो मुझमें बातों को समझने की क्षमता तो नहीं थी पर सुनकर स्मरण रखने की क्षमता आ गयी थी।

काकी-“भगवन बिटिया दे तो धन भी दे।“

अम्मा-“मंझली तुम्हारी बात तो सही है

लेकिन यह भी मानो कि धन ही सब कुछ नहीं होता है।अगर आदमी में अकल है,आदमी उद्दमी

(उद्यमी)है

और अगर भाग्य भी साथ दे तो तो ज समझौ कि रुपैया-पैसा तो हाथ का मैल है।व कही है न पुरखन ने कै “एक गुणवन्ते के पीछें सैकन्न धनवन्ते चक्कर लगाउत हैं।“

\+ + + + + + + + +

उम्र पूरी हो चली है तो अब अनेक दैहिक ,भौतिक ताप सताते हैं। बाबा कबीर ने कहा है न ! “देह धरे का दंड है सब काहू को होय;ज्ञानी भुगते ज्ञान से अज्ञानी भुगते रोय।(पाठान्तर-देह धरे का दंड है

सब काहू को होय;ज्ञानी काटै जतन से मूरख काटै रोय।)

हम तो आज के ज्ञानी हैं न ! सो हमने डायबिटीज, हाइपरटेंशन, हर्ट डिसीज,जोड़ों का दर्द आदि जो दैहिक ताप और कई प्रकार के भौतिक ताप हैं न!इनके निदान के लिए प्रातः भ्रमण का जतन कर लिया है।

पूरा समूह निकला है घूमने रोज की तरह।.......बहुत चल लिए दैहिक ताप में आराम अवश्य मिलेगा।अब सुस्ताने के बहाने “बुड्ढों का क्लब” के सभी सदस्य पार्क में बैठ कर हँसी, मजाक ,कुछ यहाँ की कुछ वहाँ की,कुछ आज की कुछ कल की कुछ आने वाले कल की बातें करते हैं।और हाँ, पर निंदा रस भी खूब लेते हैं।

रणछोड़ सिंहः -"भैया आज का युग घोर अर्थ युग है।यह अर्थ ही वह धुरी है,जिसके इर्द-गिर्द सब कुछ घूम रहा है।"

बरज़ोर सिंह -"सच है। आज योग्यता,नैतिकता की तो कोई पूछ ही नहीं है।"

मैं अब तक इनकी बातें चुपचाप सुन रहा हूँ।अकस्मात मुझे 65 साल पहले की अम्मा, काकी की बातें याद आ गयीं।

काकी कह रही थीं- 'पैसा होना चाहिए',.......हूँ......काका भी कह गए हैं-'पैसा पितु पैसा सखा....।"

स्थानीय सन्दर्भ में काकी की मूल चिंता यथार्थ सत्य है।काका का हास्य भी अक्सर बड़ा मर्मभेदी रहा है।कहीं न कहीं काकी के जीवनानुभव में और काका(हाथरसी) के लोक अनुभव में काफी कुछ समाज-सत्य प्रकट हुआ है।

अम्मा ने दूसरा पक्ष रखा था, कहा था-"एक गुणवन्ते के पीछें सैकन्न धनवन्ते चक्कर लगाउत हैं।" जबकि रणछोड़ जी का मानना है कि "एक धनवन्ते के पीछें सैकन्न गुणवन्ते चक्कर लगाउत हैं।"

सच क्या है?कौन महत्त्वपूर्ण है धन या ज्ञान?......

क्या मैं ही सोच रहा हूँ कि सच क्या है।सब सोचते हैं, बहुत पहले से सोचते आ रहे हैं,आगे भी सोचा जाता रहेगा पर भारतीय वाङ्गमय में इसका सत्य कहा जा चुका है।वही सत्य है, अटल सत्य है, सर्वकालिक, सार्वभौमिक सत्य है।यह 'सत्य' है-

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मों ततः सुखम् ।।

(हितोपदेश, श्लोक- 6)

विद्या से विनय की प्राप्ति होती है, विनय से हमें पात्रता की प्राप्ति होती है, पात्रता से हमें धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म की प्राप्ति होती है और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है ।

अस्तु मुख्य है विद्या,ज्ञान।धन तो इसके बाद तीसरे क्रम पर आता है।ज्ञान के बिना धन का न तो सही प्रबंधन सम्भव है और न उपयोग।लोक में ज्ञान के बिना कई धनवन्ते मिटते हुए देखे गए हैं।

ज्ञान है तो धन प्राप्ति सम्भव की जा सकती है।यह ज्ञान विरासत में भी मिलता है, अर्जित भी किया जाता है, यह औपचारिक शिक्षा से भी आता है, अनौपचारिक शिक्षा से भी आता है।

ज्ञान तो स्वयं ही एक धन है; सबसे महत्त्वपूर्ण धन है।

बीकानेर का किला (जूनागढ़)

बीकानेर के पुराने किले की नींव बीकानेर के यशस्वी संस्थापक राव बीका जी ने विक्रम संवत 1542 में रखी थी!

- उनके द्वारा निर्मित प्राचीन किला ऊंची चट्टान पर विद्यमान है जोकि 'बीकाजी की टेकरी' कहलाती है!

- महाराजा रायसिंह ने बीकानेर के वर्तमान भव्य दुर्ग जूनागढ़ का निर्माण करवाया! जोकि लाल पत्थरों से निर्मित है!
- महाराजा रायसिंह मुगल बादशाह अकबर और जहाँगीर के प्रमुख एवं विश्वस्त मनसबदार था!
- बीकानेर के राजाओं के द्वारा मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के कारण इस किले पर कोई बड़े आक्रमण नहीं हुये!
- इन महलों की बनावट राजपूत पद्धति पर आधारित है तथा इनकी सजावट और अलंकरण में मुगल शैली की प्रधानता है!
- बीकानेर के किले में अनूप महल की दीवारों पर सोने की पच्चीकारी का काम किया गया है!

- अनूप महल में ही बीकानेर की राजाओं का राजतिलक होता था!
- जूनागढ़ दुर्ग में बहुत समृद्ध संग्रहालय है जिस के प्रांगण में दुर्लभ प्राचीन वस्तुएं, देव प्रतिमाएं, संस्कृत में फारसी भाषा में लिखे गए हस्तलिखित ग्रंथ, विविध प्रकार की धातुओं के पात्र आदि स्थित है!
- राव लूणकरण अपनी दानशीलता के कारण इतिहास में कलियुग के कर्ण के नाम से विख्यात है!
- जूनागढ़ का किला धान्वन दुर्ग कहलाता है, इस दुर्ग में 1567ई. के चित्तौड़ साके में वीरगति पाने वाले जयमल मेड़तिया और उसके बहनोई आमेट के रावत पत्ता सिसोदिया की गजारुड़ मूर्ति स्थापित है!

राजनीतिक घटना :-

जोधपुर के महाराजा अभय सिंह ने 1740ई. मे बीकानेर पर चढ़ाई कर दी! जिसका परिणाम यह हुआ कि बीकानेर शहर में बहुत विध्वंस हुआ तथा जूनागढ़ दुर्ग पर तोपों के द्वारा गोले बरसाए गए! उस समय बीकानेर के महाराजा जोरावर सिंह ने जयपुर नरेश सवाई जय सिंह से सहायता का अनुरोध किया! तब महाराजा जयसिंह ने जोधपुर के महाराजा अभय सिंह(जो कि उनके दामाद थे) को चेतावनी देते हुए संदेश भेजा कि वह तत्काल बीकानेर से अपनी सेना का घेरा हटा ले! जब अभय सिंह द्वारा इसमें विलंब किया गया तब महाराज सवाई जय सिंह 300000 की सेना लेकर के जोधपुर पर चढ़ाई कर दी! जिससे विवश होकर अभय सिंह को बीकानेर से घेरा उठाना पड़ा!

प्रमुख दर्शनीय स्थल:-

बीकानेर तथा जूनागढ़ दुर्ग में प्रमुख दर्शनीय स्थल है :- राय सिंह का चौबारा, फूल महल, चंद्र महल, गज मंदिर, अनूप महल, रतन निवास, रंग महल, करण महल, छत्र महल, लाल निवास, गंगा निवास, विक्रम विलास, मोती महल आदि है!

- लूणकरणसर :- खारे पानी की झील!
- देशनोक:- करणी माता का मंदिर!
- कोलायत:- सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल की तपोभूमि!
- मुकाम(नोखा):- गुरु जंभेश्वर की तपोस्थली!
- जोहड़बीड :- केंद्रीय ऊंट प्रजनन केंद्र स्थित है!

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु :-

- बीकानेर राजपरिवार की छतरियां देवी कुंड पर स्थित है!
- बीकानेर रियासत जांगल प्रदेश के नाम से जानी जाती थी! कुछ लोग इसे राती घाटी भी कहते हैं!
- एशिया की सबसे बड़ी उनकी मंडी बीकानेर में स्थित है!
- जुबली म्यूज़ियम बीकानेर में स्थित है!

साक्षात्कार – विधि विशेष

माननीय संतोष विजयवर्गीय जी

नमस्कार सर,

नई गूँज मासिक पत्रिका के समस्त सम्पादक मण्डल के द्वारा हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ! सर, इस पत्रिका के साक्षात्कार कॉलम के माध्यम से हमारा यह प्रयास रहता है कि विधि के क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण व परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ उपयोगी जानकारी दे सकें !

इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आज हम आपसे आपके जीवन की उपलब्धियों एवं संघर्षो को पाठकों से साझा करने का निवेदन प्रस्तुत कर रहें हैं !

हमें पूर्ण विश्वास है सर कि आपके उत्साहवर्धक शब्दों से सभी विद्यार्थियों व नई गूँज के सभी पाठकों क़ो आगे बढ़ने, व निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा मिलेगी !

1. सर, आपके पारिवारिक जीवन एवं प्रारंभिक शिक्षा के सम्बन्ध में हमारे पाठकों क़ो कुछ बतायें !

उत्तर - मैं बांदीकुई में जन्मा था, वही मेरी स्नातक की पढ़ाई हुई मैंने एलबीएस कॉलेज जयपुर से एलएलबी की थी ! मेरे पिताजी बांदीकुई में अच्छे एडवोकेट्स में आते थे ! मैंने उनके पास बहुत ही मेहनत लगन व जिम्मेदारी से वकालत का ज्ञान प्राप्त किया !

2. सर, आज के विद्यार्थियों में मेहनत व लगन तो है किन्तु जीवन के प्रति उनका नज़रिया आशावादी न होकर निराशावादी अधिक है क्या आप इस बात से सहमत हैं ?

उत्तर – नहीं मैं इससे सहमत नहीं हूं , वकालत की पढ़ाई और प्रोफेशन में निराशा का कोई काम नहीं है ! इस लाइन में सफलता के लिए कई वर्ष मेहनत करनी होती है इसलिए आशावादी नजरिए से सब्र के साथ विद्यार्थियों को काम करना चाहिए !

3. सर, आप अपने जीवन की उपलब्धियों के लिए सबसे बड़ा योगदान किनका मानते हैं ! या आपके प्रेरणा स्त्रोत कौन हैं ?

उत्तर - मैं इसके लिए मेरे पिताश्री को मेरी सफलता का श्रेय देता हूं !

4. सर, आपने विधि क़ो ही उच्च शिक्षा व कैरियर हेतु चुना इसका क्या कारण रहा ?

उत्तर - क्योंकि मेरे घर में वकालत के प्रोफेशन के अनुकूल माहौल और सारी आवश्यक वस्तुएं व केस वर्क उपलब्ध थे !

5. सर, आपके जीवन का सर्वाधिक संघर्षमयी समय क्या रहा ?

उत्तर - वास्तविकता तो यह है मैंने अपने संपूर्ण सेवाकाल में संघर्ष ही किया है !

मैं सन 1994 में सहायक लोक अभियोजक बनकर जयपुर में नियुक्त हो गया था ! तब ए. पी.पी. को कार्यालय प्रथक से नहीं दिया गया था ! लॉ की पुस्तकें , स्टेशनरी बैठने के लिए कुर्सी , टेबल, कमरा नहीं था ! सहायता के लिए लिपिक व सहायक कर्मचारी नहीं थे ! इसके अलावा मूल पोस्टिंग के साथ साथ दो-तीन कोर्टस में पेशी करने का अतिरिक्त चार्ज भी था , जिसके लिए वेतन में कोई बढ़ोतरी या भत्ता नहीं दिया जाता था !ऐसे समय में मैंने चुनौती मानकर अपनी ड्यूटी की है ! सन 2011 में मुझे संपूर्ण राजस्थान में दर्ज होने वाले फेक करेंसी की कोर्ट जयपुर में S P L. P. P. व उसके साथ ही यहां 80 किलोमीटर दूर शाहपुरा जिला जयपुर की A.

D. J. कोर्ट में एडिशनल पी.पी. के रूप में पैरवी करने का कार्य दिया ! उसके बाद जयपुर में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत जयपुर में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत बनने वाले मुकदमों की पैरवी के लिए A. C. B. कोर्ट नंबर दो, जयपुर में कार्य मिला ! ये सब बड़े संघर्ष में ही समय रहे !

6. सर, न्यायिक सेवाओं व व्यवस्थाओं की वर्तमान दशा के सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर - न्यायिक सेवाओं व व्यवस्थाओं की वर्तमान दशा मेरी नजर में अच्छी नहीं है ! इसमें सुधार के लिए सम्माननीय उच्च न्यायालयों को अपने क्षेत्र में आने वाले R. J. S.पद के अधिकारियों से उनकी रूचि में क्रिमिनल व सिविल मामले में से एक का विकल्प लेना चाहिए ताकि वे कुछ समय बाद लॉ पर अच्छी पकड़ कर मुकदमे के निस्तारण में शीघ्रता दिखा सकें!

ए.सी.जे.एम. रैंक के अधिकारी के पास बयान लेना, उसके बाद बहस अंतिम सुनकर तुरंत फैसला देने का काम होना चाहिए! ताकि रिमांड, जमानत, सुपुर्दगी, तलबी तामिल इत्यादि कार्यों में इतने सीनियर न्यायिक अधिकारी का समय ना लगे! विशेष कोर्ट में ऐसी व्यवस्था रहे कि फैमिली कोर्ट, एन.डी.पी.एस एक्ट, एस. सी एस.टी एक्ट, A. C. B.,एन.आई. एक्ट, सी.बी.आई., आर्थिक मामलात, M. A. C. T., क्लेम ट्रिब्यून, रेंट कंट्रोल, रेलवे कोर्ट, सर्विस ट्रिब्यूनल,, लेबर कोर्ट,ई.सी एक्ट, फ़ूड सेफ्टी आदि विशेष तरह के मामलों में एक न्यायिक अधिकारी को

महारत हासिल होने पर उनका स्थानांतरण उसी तरह की दूसरी शहर की कोर्ट में होने से उन्हें नए कानून से अपडेट होने में लगने वाला समय व श्रम की बचत होगी और वे पहले दिन से उसी रफ्तार से कार्य कर सकेंगे , जिस रफ्तार में वे पिछली कोर्ट में कर रहे थे !

दूसरा उनके पास लिपिक ही कम से विधि स्नातक स्तर के हों ! कार्य की अधिकता भी ज्यादा होने से वर्तमान दशा में न्यायालय में शीघ्र न्याय या न्यायिक कार्य नहीं हो पाते हैं ! इससे लोगों में निराशा है !

7. सर क्या न्याय जगत की वर्तमान दशाओं के सुधार में हमारी युवा पीढ़ी की भागीदारी हो सकती है , कृप्या कुछ सुझाव दीजिये !

उत्तर - न्याय जगत की दशा के सुधार में युवा पीढ़ी अपनी भागीदारी दे सकती है ! युवा अधिवक्ताओं को चाहिए कि वे अदालत में अपनी पूरी तैयारी के साथ जाकर अधिक से अधिक कार्य समय पर करें ! बिना उचित कारण के कोई पेशी को, उस दिन होने वाले को किए बिना केस में एडजस्टमेंट नहीं लेवे !

8. सर, सफलता का कोई मूल मन्त्र अर्थात रणनीति बताना चाहेंगे, विद्यार्थियों क़ो ?

उत्तर - विद्यार्थियों को इस व्यवसाय में दृढ़ निश्चय करके ही आना चाहिए half hearted व्यक्ति या दूसरी ओर किसी लाइन में जानेr की आकांक्षा रखने वाला व्यक्ति या विद्यार्थी इस लाइन में सफल नहीं हो

सकेगा ! इसलिए L. L. B.. की पढ़ाई के समय से ही इस लाइन में ध्यान देना होगा और सब विषयों को अच्छी तरह से तैयार कर, अपनी एल.एल.बी. की पढ़ाई करनी चाहिये ! इसके बाद अच्छे अधिवक्ता के पास कम से कम 4 से 6 वर्ष तक मेहनत करनी चाहिए ! तब सफलता निश्चित तौर पर मिलेगी ! व इसी लाइन से ए.पी.ओ., आर. जे.एस ए.डी.जे आदि पद भी आसानी से मिल जाएंगे!' व उसके बाद में भी कार्यों में सफलता मिलेगी यह मेरा विश्वास है !

9. सर, कुछ उत्कृष्ट पत्रिकाओं या पुस्तकों क़ो पढ़ने का सुझाव यदि आप देना चाहें, जिससे पाठक उनका अध्ययन कर लाभान्वित हो सकें !

उत्तर - अच्छी पुस्तकों में ऑल इंडिया रिपोर्टर प्राइवेट लिमिटेड, नागपुर lexis nexis ईस्टर्न बुक कंपनी वाधवा आदि अन्य बहुत से प्रकाशन प्रकाशक लॉ की पुस्तकें प्रकाशित करते हैं इनको पढ़ने से लाभ होता है !

10. सर, आप अपने जीवन व कर्म क्षेत्र के प्रति अत्यंत न्यायशील व्यक्तित्व हैं ! आप अपने अमूल्य जीवन अनुभवों में से जो भी अपने विधार्थियों क़ो बताना चाहें वह हमेशा उनके लिए दिशा बोधक की भांति होगा इस पर कुछ प्रकाश डालें !'

उत्तर :- इसके लिए विद्यार्थी को मौजूदा परिस्थितियों में उठने वाले legal questions से आत्मसात करना पड़ेगा ! नए अधिनियम की आने पर उसके उद्देश्य, कारण आदि पर विचार करना होगा और उसके लागू होने के बाद क्या स्थिति रही इसकी समीक्षा करनी होगी, तब किसी लेकर लीगल समस्या को समझने और उसे हल करने में उपरोक्त मेहनत काम आएगी ! और सफलता मिलेगी ! इसी प्रकार समय समय पर आने वाले महत्वपूर्ण निर्णयों पर भी विद्यार्थी को समझना होगा कि उक्त फैसला क्या मार्गदर्शन दे रहा है और पूर्व के फैसले कैसे जुड़े हुए हैं तब उस फैसले का महत्व समझ में आएगा !

धन्यवाद सर

समस्त सम्पादक मण्डल की तरफ से आपका धन्यवाद !
आपकी दी रोशनी में हमारी भावी पीढ़ी सदा चमकती रहे ! सफलता प्राप्त करती रहे ! इन्हीं कामनाओं के साथ !'

सम्पादक
डॉ शिवा धमेजा

अगस्त अंक 2022 के लेखक परिचय

- गिरेंद्र सिंह भदौरिया
  prankavi@gmail.com
  9424044284
  6265196070
  पता :- वृत्तायन 957 स्कीम नंबर 51
  इंदौर मध्य प्रदेश पिन :-452006

- डॉ घनश्याम बादल
  215, पुष्परचना, गोविंद नगर
  रुड़की
  9412903681
  Ghansyambadal54@gmail.com

- बृजेश कुमार
  Aryabrijeshsahu24@gmail.com
  9785837924
  पता - जुरेहरा भरतपुर राज.
  321023

- मृत्युंजय कोहरी
  रांची झारखंड
  07903208238
  Mritunjay03021992@gmail.com

- सुभाष चंद लखेड़ा

  Subhash. Surendra@gmail.com

  9891491238

- प्रियदर्शी खेरा

  90-91/1, यशोदा विहार , चुना भट्टी , भोपाल (मध्यप्रदेश)

  9406925564

  Email:-pdkhaira@gmail.com

- हमीद कानपुरी

  अब्दुल हमीद इदरीसी

  पता :- 179, मीरपुर, कैंट

  कानपुर 208004

  ईमेल : ahidrisi1005@gmail.com

- श्यामल बिहारी महतो

  बोकरो झारखण्ड

  Shyamalwriter@gmail.com

- डा. आर.बी. भंडारकर

  सी -9 स्टार होम्स

  रोहित नगर फेस-2

  भोपाल ,462039

  dr.r.b. bhandarkar@gmail.com

- गौरीशंकर वैश्य

  117 आदिल नगर,

  विकास नगर लखनऊ 226022

  मो; 09956087585

  Gsvaish51@gmail.com

- डॉ शिवा धमेजा 9351904104

  Drshivadhameja01@gmail.Com

  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- हरदीप सबरवाल

  ई-मेल:-sabharwalhardeep@yahoo.com

- समीर उपाध्याय

मनहर पार्क:96/ए चोटिला:363520
जिला:सुरेंद्रनगर
गुजरात
भारत
92657 17398
S.l.upadhyay1975@gmail.com

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924